ISBN: 978-93-5913-470-3

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान
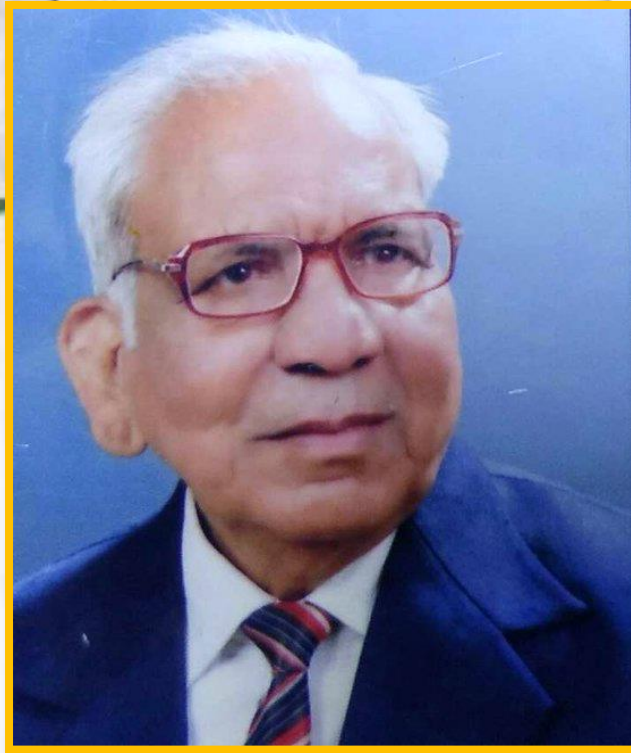
- डॉ० राजीव अग्रवाल
- मंजीत सिंह
- रवि कान्त वर्मा

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

डीन - शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

मंजीत सिंह

एम.ए. (इतिहास), एम.एड.

रवि कान्त वर्मा

एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य), बी.एड.

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

मंजीत सिंह

रवि कान्त वर्मा

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹ 45

ISBN: 978-93-5913-470-3

प्रकाशक—

रवि कान्त वर्मा

तिलक नगर,

नरैनी रोड़, अतर्रा

जिला-बांदा, उत्तर प्रदेश - 210201

+91 8960118741

vravikant97@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हों। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है **डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान** इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है, जिसके अंतर्गत वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

तृतीय अध्याय में डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित है जिसके अंतर्गत उनके बाल्य जीवन, वंश परंपरा, अध्ययन यात्रा, गृहस्थ जीवन, अध्यापन यात्रा, सामाजिक योगदान एवं पुरस्कार के बारे में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' की साहित्यिक सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसमें उनके द्वारा लिखी गईं सात कृतियों का वर्णन है।

पंचम अध्याय में डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन किया गया है। जिसके अंतर्गत सामाजिक शिक्षा, अनुशासन, गुरु शिष्य सम्बन्ध, राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र शिक्षा शीर्षकों के अन्तर्गत उनकी विचारधारा प्रस्तुत की गई है।

षष्ठ अध्याय पुस्तक का अन्तिम अध्याय है जिसमें निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सोद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक मनुष्य के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतएव यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन तथ्यों को दूर कर सकेंगे।

राजीव अग्रवाल

मनजीत सिंह

रवि कान्त वर्मा

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं । इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' का अर्थ है सीखना और सिखाना । 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया ।

जब हम ‘शिक्षा’ शब्द के प्रयोग को देखते हैं तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है, व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रति का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से

अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर संबंधित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

अति प्राचीन काल से शिक्षा की अवधारणा विचारकों तथा दार्शनिकों के मस्तिष्कों को आन्दोलित करती आ रही है। 'शिक्षा' (Education) शब्द एक व्यापक गुणार्थ है। इस कारण इसको सार रूप में परिभाषित करना कठिन है। जीवशास्त्री, धर्मप्रवर्त्तक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ, शिक्षक, अभिभावक, राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री आदि सभी इसको विभिन्न अर्थों में परिभाषित करते हैं। इस कारण शिक्षा बहुअर्थी है । प्रत्येक व्यक्ति जो इस शब्द (शिक्षा) के विषय में पढ़ता है या सुनता है वह इसको अपने हित की दृष्टि से विवेचित या परिभाषित करता है। ये सभी व्यक्ति जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण से इसकी विवेचना करते हैं। उदाहरणार्थ, अभिभावक इसको एक सकारात्मक शक्ति के रूप में देखता है जो उसके बालक को समाज में समृद्धि, प्रतिष्ठा तथा नाम प्रदान करने के योग्य बनाती है। शिक्षक इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है - यह बालक को नवीन मानव बनाने में सहायता प्रदान करती है। साथ ही यह समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाती है। छात्र इसको दूसरे रूप में देखता है-शिक्षा जान, अभिषृत्तियाँ तथा कौशल प्रदान करने वाला साधन है । साथ ही यह डिग्री व प्रमाण पत्र प्रदान करती है। धर्म प्रवर्तक ईस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है इसके द्वारा भौतिक बर्बरता को समापत करके आध्यात्मिक मूल्यों को ग्रहण किया जा सकता है। इस प्रकार सभी व्यक्ति' शिक्षा' शब्द की विवेचना अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं।

शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ हैं एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेषता आ जाती है। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी शक्तियां (भौतिक और सामाजिक शक्तियां) भी प्राप्त होती है मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। यही क्रिया-प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास करने की

प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आंतरिक विद्यमान होती है, उनका विकास वातावरण के सम्पर्क में से होता है।

मानव अपने विकास के लिए जन्म से प्राप्त शक्तियों और भौतिक व सामाजिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु क्रिया प्रतिक्रिया करता रहता है | इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप मानव ज्ञान व अनुभव प्राप्त करता है और वह सीखता है।

- शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक सामाजिक विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक बहुमुखी प्रक्रिया है।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के अतिरिक्त प्रशासन और व्यवसाय जैसे तत्वों के समाविष्ट होने के कारण इसकी दशा और दिशा एक सामान्य शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न हो चुकी है। इसका मूल उद्देश्य अक्षर ज्ञान से शुरू होकर जीविकोपार्जन के किसी साधन तक सीमित हो चुका है जिसके चलते मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित होता है. इस बाधा के उत्पन्न होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार

की कुंठाओं और वैमनस्य का अंकुरण होता है जो आगे चलकर एक वृहद समस्या का रूप धारण कर लेता है जिनमें भेदभाव, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिकता प्रमुख हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता के आधार पर कुछ विशिष्टतायें है परन्तु वह उपयोगिता मनुष्य को भौतिक संसाधनों के चरम सुख की तरफ ले जाती है. भौतिक संसाधनों की अधिकता और कमी के आधार पर समाज का विघटन होना शुरू हो जाता है और मनुष्य उच्चवर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा निम्न वर्गीय श्रेणियों में गिने जाने लगते हैं जबकि शिक्षा का लक्ष्य असमानता उत्पन्न करना नहीं होता वरन् मानव पीढ़ी के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करते हुए उन्हें पूर्णता प्रदान करना होता है. साथ ही भौतिकता नैतिक मूल्यों से सुरक्षित रहती है जिसका विकास आध्यात्मिकता से होता है जो कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अंग नहीं है जबकि शिक्षा एक मूलभूत आवश्यकता होती है ताकि हमारी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकतायें पूर्ण हो सकें तथा इस आधार पर ही किसी शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन किया जा सकता है। इस शिक्षा पद्धति में आर्थिक आवश्यकता के अतिरिक्त कोई अन्य आवश्यकता को आवश्यकता नहीं समझने की भूल की जाती है. जिसके चलते समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है और इनमें से कुछ समस्याओं की अप्रत्यक्ष रूपरेखा निम्नलिखित हैं जिनके समाधान व्यक्तिगत रूप से भले ही तलाश किये जाये परन्तु सामूहिक रूप से उनकी स्वीकार्यता होनी चाहिये।

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

शिक्षा के व्यवसायीकरण के कारण तेजी से शिक्षा का प्रचार हो रहा है। जिन लोगों को प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल रहने के कारण किसी व्यावसायिक या अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं मिल पाता, वे अधिक धन खर्च करके मनोवांछित शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, इस तरह शिक्षा के व्यवसायीकरण के कारण देश का धन सकारात्मक कार्यों में लग रहा हैं। नई शिक्षण संस्थानों की स्थापना के कारण नवयुवकों को रोजगार नयें अवसर उपलब्ध हो रहे शिक्षण से सम्बन्धित व्यवसायो को भी गति मिल रही हैं। निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रतिभावान छात्रों को ही अवसर मिलता हैं पिछले कुछ वर्षों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई हैं। इतनी अधिक संख्या में प्रति वर्ष सरकारी नौकरियों का सृजन कर पाना संभव नहीं हैं। निजी संस्थाओं की अधिकता के कारण इन लोगों को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इस तरह शिक्षा

के व्यावसायीकरण / निजीकरण के कारण देश के आर्थिक विकास को गति मिल रही हैं। यही नहीं शिक्षा के क्षेत्र में निजी भागीदारी से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार हो रहा हैं। निजी शिक्षण संस्थानों में योग्य शिक्षको को बेहतर वेतनमान पर भर्ती किये जाने से शिक्षकों की दशा में सुधार के साथ साथ शिक्षित लोगों के लिए रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इस तरह शिक्षित लोगों के जरियें रोजगार के साधन उपलब्ध कराने एवं शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षा में निजीकरण को बढ़ावा देना उचित हैं। इस तरह निजी क्षेत्र में प्रबंधन की अक्षमता एवं मनमानी के कारण न तो शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हो पा रही हैं और न ही गुणवत्ता के पैमाने पर ये खरे उतर पा रहे हैं। इसके साथ ही निजी क्षेत्र के शैक्षिक संस्थानों द्वारा शोषण एवं गलत मार्गदर्शन के कारण लाखों छात्र का भविष्य अंधकारमय हो रहा हैं। यही कारण हैं कि शिक्षा के निजीकरण के औचित्य पर सवाल उठाए जा रहे हैं।

पहले धनी व्यक्तियों द्वारा शिक्षण संस्थाओं की स्थापना सामाजिक सहयोग एवं उत्तरदायित्व निभाने के लिए की जाती थी। अब इसका उद्देश्य सामाजिक सहयोग न होकर धनार्जन हो गया है. इसलिए शिक्षा के निजीकरण से जो लाभ होना चाहिए, वह समुचित मात्रा में समाज को प्राप्त नहीं हो रहा हैं। यदि शिक्षा के निजीकरण में मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जाए एवं शिक्षकों की सेवा शर्तों का संरक्षण सरकार द्वारा हो, तो शिक्षा के निजीकरण के लाभ वास्तविक रूप में मिल पायेंगे।

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

यदि देश में शिक्षा की स्थिति का आकलन करें तो दयनीय है। विशेष रूप से अगर प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा को देखा जाए तो पूर्ण रूप से इसका राजनीतिकरण हो गया है।
इसका शिकार कोई और नहीं देश का वह गरीब तबका होता है जो सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करता हैं। देखा जाए तो सरकारी विद्यालयों के बच्चों पर मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा का बोझ ऐसे डाल दिया जाता है जैसे इसकी जिम्मेदारी सिर्फ इन बच्चों की हैं। बचपन में जब इसकी जिम्मेदारी मुझे मिलीं तो मुझे भी बहुत खुशी हुई थी होना भी चाहिए। एक बार हिन्दी पढ़ लेने के बाद कोई कितना भी अंग्रेजी पढाये लेकिन वो हिन्दी वाली फिलींग आती नही है । एक समय आता हैं हमें पता चलता हैं कि हायर शिक्षा में अंग्रेजी के बिना दाल नहीं

गलने वाली फिर यहाँ से हम अंग्रेजी सिखना शुरू करते है क्योंकि आगे का सफर बिना अंग्रेजी के नहीं चलने वाली अब हम हिन्दी से निकल कर अंग्रेजी के नौका पर सफर करतें हैं जो आनंद करते हुए इसे सिख जातें हैं उसकी नैया पार हो जाती है नहीं तो जिंदगी भर उलझन बनी रहती है। प्राथमिक शिक्षा हर बच्चें का अधिकार है जिसकी जिम्मेदारी सरकार की होती हैं लेकिन सरकार हमें ऐसी शिक्षा देती है जिसका खामियाजा पूरे कैरियर पर पड़ता हैं। यदि बचपन में शिक्षा स्तर सही होता तो शायद इससे बेहतर स्थित होती। हिन्दी और अंग्रेज़ी के चक्कर मे किसी सरकारी विद्यालय के बच्चे के कैरियर में लचीलापन नहीं होता, सबको समान शिक्षा दे पाते और सबका साथ सबका विकास की संकल्पना को पूरा कर पाते। वर्तमान में देखा जाए तो समितियां शिक्षा में सुधार के लिए सुझाव सरकार को देती हैं लेकिन नेता अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए शिक्षा और हायर शिक्षा के बीच समन्वय की बात नहीं करते सब अपने फायदा के लिए शिक्षा का राजनीतीकरण करते हैं।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभाव व शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरू-शिष्य परंपरा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी। जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरू का सम्मान करते हुए शिक्षा पाते थे। परंतु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिस कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हम शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभाव व शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरू-शिष्य परंपरा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गंभीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र संबंधों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा

कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक, गुरू, छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्नप्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण है सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानांतर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है। जिसे हमें सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। हम जब से अपनी शिक्षा पद्धति में पश्चिमी प्रणाली को लाए हैं। शिक्षक छात्र के बीच सम्मान देने की खाई बढ़ी है। पहले जहां प्रणाम का स्थान था अब गुड मॉर्निंग व गुड इवनिंग पर आ गया है। इसमें आप शिक्षा में किस प्रकार की आशा कर सकते हैं। हमें सबसे पहले प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर खास ध्यान देना होगा। इसे संस्कृति से जोड़ना होगा। तभी आप देशी संस्कृति वाली शिक्षा की कल्पना कर सकते हैं।

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। इसमें भी प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से पंजाब के तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएं संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। होशियारपुर के गांव कितना के सरकारी स्कूल की बात करें तो यहां चार वर्षो से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। स्थिति देश के संपन्न

राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त नहीं कर सकती। गांव कितना के स्कूल में एक अध्यापिका है भी तो वह तीन साल में तीसरी बार विदेश गई है। यहां बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहां पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पांच साल पहले केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती। यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं । पंजाब सरकार को तत्काल ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

आज तक की किसी भी सरकार ने शैक्षिक गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार हेतु इन संस्तुतियों को लागू कभी लागू ही नहीं किया। फलस्वरूप धीरे-धीरे शिक्षा की गुणवत्ता घटती गई और शैक्षिक माहौल ध्वस्त होते चला गया। छात्र-छात्राओं के साथ ही गुरुजन भी भारतीयता से विमुख होते चले गए और सनातन संस्कृति का दिन-प्रतिदिन हास होते चला गया। यह बात सकारात्मक शिक्षा की पुर्नस्थापना एवं इसके प्रचार प्रसार व छात्र-छात्राओं के भारतीयता में श्रीराम के जीवन दर्शन से जुड़े आदर्शों को अपनाने में आत्मसात करने हेतु तुलसी कृत श्रीरामचरितमानस को सर्वोपरी ग्रंथ मानकर ही इसे अनुष्ठान का स्वरूप प्रदान किया गया है। उन्होंने चरित्र निर्माण हेतु आत्मबल को ऊंचा करने तथा चतन में मानवीय मूल्यों को ही आदर्श के रूप में अपनाए जाने हेतु युवाओं से कार्यक्रम में सहभागिता निभाने का आग्रह किया।

1.2.6 योग्य शिक्षकों का अभाव

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस युग में हम ज्ञान-विज्ञान की गुणवत्ता आधारित शिक्षा के बगैर टिक नहीं सकते। शोध, तकनीक और प्रौद्योगिकी का विकास एवं उपयोग ही हमें वैश्विक शिक्षा के मंच पर प्रतिष्ठित कर सकता है। भारतीय शिक्षा के समक्ष आज सबसे बड़ी चुनौती योग्य शिक्षक का अभाव है। भारत को योग्य एवं अद्यतन ज्ञान-विज्ञान से लैस शिक्षकों के लिए अलग से विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए। शिक्षकों की उचित चयन प्रक्रिया का अभाव होने की वज़ह से अक्षम शिक्षकों का भी चयन हो जाता है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण होती भी जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आधुनिक समय में योग्य शिक्षको का अभाव है। जहां अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। योग़्य शिक्षकों के द्वारा किये गए कार्यो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। उनकी लिखी हुयी कृतियाँ को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान पर लघु-शोध करने का निर्णय किया।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया—

"डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान"

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में उद्देश्य निम्नलिखित है—

- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' की साहित्यक सर्जना का अध्ययन करना।
- डॉ०. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है, जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत लघु शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस स्टडी अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान संबंधी अनुसन्धान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का सबसे अधिक महत्व है, और यह व्यापक रूप से व्यवहार में आया है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, "वर्णनात्मक अनुसन्धान क्या है', का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रहीं है, प्रक्रियाएँ जो चल रहीं हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा जो नयी दिशाएँ विकसित हो रहीं हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।"

वास्तव में किसी समस्या के समाधान में आगे बढ़ने से पूर्व व्यक्ति को उस वस्तु से परिचित होना आवश्यक है जिसके क्षेत्र में वह कार्य कर रहा है। अतः अन्य विज्ञानों के समान ही शिक्षात्मक अनुसन्धान में

ही प्रारंभ में किसी घटना विवरण अथवा विषय के सम्बन्ध को स्पष्ट करने पर विशेष ध्यान था। छात्रों, विद्यालयों, प्रशासन, पाठ्यक्रम, अथवा किसी विषय के शिक्षण संबंधी समस्या के समाधान से पूर्व अनुसंधानकर्ता के मन में यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना मूल उद्देश्य होता है। किन्तु वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता का सम्बन्ध केवल तथ्यों को एकत्र करने मात्र से नहीं है अपितु एक कुशल अनुसंधानकर्ता का लक्ष्य तो विभिन्न चरों में सम्बन्ध ढूंढना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

इसके अंतर्गत शोधकर्ता किसी सामाजिक इकाई-एक व्यक्ति, परिवार, समूह, सामाजिक संस्था अथवा समुदाय का गहन अध्ययन करता है। वह उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली भूतकालीन घटनाओं अथवा अनुभूतियों, वर्तमान स्थिति एवं वातावरण के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्र करता हैं। इन तत्वों के सम्बन्धों का विश्लेषण करने के पश्चात वह उस इकाई की स्थिति का चित्रण करता है। केस स्टडी विधि में एक व्यक्ति, समूह, संस्था एवं समुदाय का गहन अध्ययन किया जाता है।

मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र में केस अध्ययन विधि का प्रयोग आरम्भ से ही किया जा रहा है। सामाजिक शोध में केस अध्ययन विधि का प्रयोग सबसे पहले फ्रेड्रिक ली प्ले द्वारा 1840 में पारिवारिक बजट के अध्ययन में किया गया।

इसी अर्थ में पी० वी० यंग ने केस अध्ययन विधि इस प्रकार परिभाषित किया है। "केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई के जीवनी का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जा सकता है।" यह अध्ययन सामाजिक वास्तविकता को जानने के लिए प्रदत्तों के संकलन, संगठन, विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण का एक ढंग है। केस स्टडी अध्ययन विधि को एक अध्ययन विधि या एकल अध्ययन विधि अथवा व्यक्ति अध्ययन विधि के रूप में भी संबोधित किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

शिक्षा व्यवस्था में आई नीरसता एवं अरुचि को दूर करने तथा छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए प्राय: नए प्रयोग किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है। नए प्रयोग किस प्रकार किए जाएँ, यह एक विचारणीय प्रश्न हैं। अत: इन नए प्रयोगों के आधार पर शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र मे कुछ नई एवं अभूतपूर्व उपलब्धियां डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के द्वारा प्राप्त हुई। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बहुत सी कविताएँ और पाडुलिपियाँ जो पहले कभी प्रकाशित नही हुयी हैं, जिनके बारे में शायद ही किसी को जानकारी रही हो, जो अपने समय से ही लुप्त रही हैं, जिन्हें खोज निकालने का श्रेय डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित जी को जाता है, जिन पर इस शोध के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पथ होते हैं ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढी को ज्ञान का स्थानान्तरण, ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिंतन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आंशिक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से संबंधित जितना भी यथा संभव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाऐं व गत वर्षों में एकत्रित किये गये अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्व परिचित करे जिससे यह ज्ञात होता है कि समस्या से संबंधित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है। उसमें शोध की कौन सी प्रविधि प्रयुक्त की गई और समस्या का कौन सा पक्ष ऐसा है, जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यवहारिक आधार पर मानव संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर परिष्कृत कर अथवा पूर्ण या आशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं ज्ञान को एकत्र करना एक दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्तों से भली भाँति अवगत होना चाहिए। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता हैं कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से संबंधित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका हैं। अथवा नहीं।

"डॉ. सी. वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है। जब तक उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।

अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हों उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई हैं तथा सदियों से उसका एक क्रम निरन्तर चला आ रहा हैं ज्ञान की यह प्रक्रिया अनन्त है जब तक मानव जीवन है उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती हैं। क्या हो कैसा हों या होना चाहिए ? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो या सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारम्भिक कथन हैं।

संबंधित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों ज्ञानकोष, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिलेखों विज्ञप्तियों आदि से हैं जिनके अध्ययन की रूप रेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में प्रेरणा व सहायता मिलती हैं।प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो या सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारम्भिक कथन हैं। संबंधित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों ज्ञानकोष, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिलेखों विज्ञप्तियों आदि से हैं जिनके अध्ययन की रूप रेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में प्रेरणा व सहायता मिलती हैं। अनुसंधान के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक हैं। संबंधित समस्या के साहित्य का ज्ञान होने पर यह जानने में सहायता मिलती हैं कि पहले क्या प्राप्त किया जा चुका है। इस परिणाम को ज्ञात करने के लिये कौन कौनसी विधि प्रयोग में लाई गई हैं। इसके क्या परिणाम निकलें तथा कौन सी समस्या का समाधान अभी शेष हैं। योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र में हुये नवीनतम् अन्वेषणों, विद्यार्थी और शोधकर्ता को शैक्षिक सुचनाओं के साधनों और उपयोगी तथा नवीनतम् साहित्य से परिचित होना चाहिए। किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान हैं। जिस पर सारा भावी कार्यक्रम आधारित रहता है। यदि शोधकर्ता संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा नींव को दृढ़ नहीं कर लेता है तो हमारा कार्य प्रभावहीन तथा महत्वहीन हो सकता हैं या उस कार्य की पुनरावृत्ति हो सकती हैं। नियमानुसार किसी भी शोध प्रबंध में संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जाता है तब तक उस शोध से

संबंधित साहित्य का आधार विवरण में नहीं होता है कि अतः शोधकर्ता के मार्ग को प्रशस्त करने एवं शोधकार्य के उद्देश्यों को पूर्ण करने में संबंधित साहित्य का अधिक महत्व है।

2.2 शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्य का अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है—

तिवारी, सुधा (2004)* ने 'लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- महात्मा गांधी स्वयं ऐसे पुरूष थे जिन्होंने अपनी मस्तिष्क मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था और एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।

- पं० दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता थे उनके जीवन दर्शन में संघ का ही प्रभाव दृष्टिगोचर है। 1937 में जब वह स्वयं सेवक बने उस समय स्वतन्त्रता आन्दोलन जोरों पर था, अनेक क्रान्तिकारी महापुरुषों ने भारतीय समाज को स्वतंत्रता के आन्दोलन में सहभागी बनाने का कार्य किया।

- महात्मा गांधी जी एवं पं० दीनदयाल उपध्याय जी दोनों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की तुलना में यह देखा है कि दोनों सामाजिक समस्याओं के समाधान में ही शिक्षा का महत्व प्रतिपादित करते हैं। आत्म क्रियाशीलन, शरीर श्रम स्वानुभूति तथा सामाजिक सेवा हेतु द्वारा आत्मानुभूति पर बल देते हैं। सत्य के प्रति दोंनों के विचार एक तरह से समान हैं। महात्मा गांधी जी का सत्य सापेक्षिक है। इनका सापेक्षिक सत्य प्रयोगीय है, परीक्षणीय है।

- पं० दीनदयाल उपाध्याय जी उन महापुरूषों में से एक आधुनिक राष्ट्रीय चिन्तक तथा अग्रगण्य महामानव है जिनके मार्गदर्शन में चलकर निश्चित ही यह राष्ट्र परम वैभव को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध हो सकेगा।

सिंह, राजेश कुमार (2005)* ने 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ नाथ टैगोर एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार एवं योगदान का तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- टैगोर जी एवं मालवीय जी दोनों ने ही शिक्षा का केंद्र नीतिशास्त्र, मूल्यों एवं चारित्रिक विकास को माना है।
- शिक्षा का साधन मानकर टैगोर जी एवं मालवीय जी शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक संवेगात्मक, सामंजस्य की क्षमता, सामाजिक एवं नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास के उद्देश्यों की प्राप्ति चाहते है।
- दोनों के विचारों में बहुमुखी उद्देश्यों की परिकल्पना समान रूप से दृष्टिगत होती है।
- शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जहाँ टैगोर जी ने इतिहास, भूगोल विज्ञान, प्रकृति विज्ञान आदि विषयों के साथ-साथ विभिन्न क्रियाओं को भी पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया है वहीं मालवीय जी बच्चों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम के विकास को महत्व देते थे।

मिश्र, अजय कुमार (2006)* ने 'जॉन डीवी एवं रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- जॉन डीवी द्वारा रचित करके सीखना सूत्र के प्रयोग पर टैगोर जी का भी समान विचार है। जॉन डीवी एवं टैगोर दोनों ने कर्म के द्वारा ही ज्ञान के विकास को आधार माना है।
- डीवी और टैगोर दोनों ने शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया माना है। एक ओर जहाँ टैगोर ने शिक्षा को बालक की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास से जोड़ा है वहीं डीवी ने इसे मनुष्य के सम्पूर्ण शक्तियों का विकास करने के माध्यम का पर्याय बताया है।

- शिक्षा के उद्देश्यों की परख करते हुए डीवी और टैगोर शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि सभी प्रकार के उद्देश्यों का समावेश अपने विचारों में समान रूप से ध्वनित किया है।
- डीवी पाठ्यक्रम को वास्तविक जीवन से जोड़कर समग्र एवं क्रियाशील पाठ्यक्रम के पक्षधर दिखाई दिये हैं। डीवी और टैगोर के पाठ्यक्रम सम्बंधी तुलनात्मक विचारों से यह उद्घाटित होता है कि परिवर्तनशील विश्व के गतिशील समाज की आवश्यकताएं बदली रहती है अतः पाठ्यक्रम में भी उनके अनुरूप बदलते रहने की क्षमता होनी चाहिए।
- डीवी और टैगोर दोनों का विचार है कि शिक्षक का दायित्व विद्यार्थियों के अंदर छिपी आन्तरिक शक्तियों का प्रकटीकरण होना चाहिए। डीवी ने शिक्षक को एक चतुर बढ़ई की संज्ञा दी है जो अपने नवीन शिक्षार्थी की सहायता करके उसे राष्ट्र निर्माता बनाता है।

सिंह, जया (2007)* ने 'उन्नसवीं शताब्दी के शैक्षिक पुनर्जागरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान' का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपरोक्त दोनों शिक्षा प्रणालियों का सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण होना चाहिये। महर्षि दयानन्द एवं 19वीं शताब्दी के धर्म सुधार आन्दोलन के अन्य नेताओं ने जिस बात का विरोध किया. वह पाश्चात्य शिक्षा का आत्मीकरण नहीं था, बल्कि देश के प्राचीन शैक्षिक आदर्शों की अवहेलना करते हुये उसकी वृद्धि करना था। उनका विचार था कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली को प्राचीन भारतीय आदर्शों का पूरक होना चाहिये, न कि उसका स्थान ग्रहण करना चाहिये। दूसरे शब्दों में हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य साहित्य और विज्ञानों को ग्रहण कर सकती है किन्तु उसकी आत्मा भारतीय रहनी चाहिये। दूसरे राष्ट्र हमें प्रकाश दे सकते हैं किन्तु हमारी प्रगति की दिशा का निर्धारण हमारे इतिहास के द्वारा होना चाहिये। आर्य समाज के डी०ए०वी० विद्यालय और महाविद्यालय तथा अन्य आर्य विद्यालय इसी आकांक्षा की पूर्ति के लिये स्थापित किये गये।

- शिक्षा के प्रसार कुरीतियों के निवारण सामाजिक न्याय और समता की स्थापना, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, स्वदेशी राष्ट्रीयता का विकास, पाखंड खंडन, रूढ़ियों के निराकरण और अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति आदि के लिये जो ठोस कार्य महर्षि दयानन्द और आर्य समाज द्वारा किया गया है वह 19वीं शताब्दी के किसी अन्य आन्दोलन और उसके नायक द्वारा नहीं।
- आज जो धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक शैक्षिक एवं राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रगति की किरण दिखाई दे रही है उन सब में महर्षि दयानन्द की निर्दिष्ट रूपरेखा दृष्टिगोचर हो रही है। महर्षि दयानन्द की सूक्ष्मदृष्टि में कोई भी विषय अछूता न रहा जो युग निर्माण में बाधक रहा हो। चाहे बाल विवाह हो या बेमेल विवाह, गोहत्या स्त्री और शुद्ध का वेदाध्ययन से दूर, छुआछूत विकृत पूजा पद्धति, धर्म के नाम पर नाना विध सम्प्रदाय, अंधविश्वास, वेदों का सत्य अर्थ, शिक्षा का अंग्रेजीकरण, स्वदेश एवं स्वसंस्कृति के प्रति हीन भावना इन सबके विरुद्ध उस योद्धा ने चट्टान की भाँति अपने को प्रस्तुत किया।

सिंह, दिनेश प्रताप (2007)* ने 'भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में राजा राम मोहन राय का योगदान एवं वर्तमान में उपादेयता का अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- समाज सुधार के लिए राममोहन ने जो आन्दोलन छेड़ा, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण और सफल आन्दोलन, जो राजा राम मोहन राय के नाम के साथ सदा जुड़ा रहेगा, वह था "सती प्रथा के विरुद्ध राममोहन का संघर्ष।
- राजा राम मोहन राय के सतीप्रथा के विरूद्ध छेड़े गए आन्दोलन के पीछे उनकी हिन्दू नारी की तत्कालीन अवस्था के प्रति गहरी सहानुभूति थी। उन दिनों हिन्दू नारी पिता या पति किसी की भी सम्पत्ति की अधिकारिणी नहीं होती थी। इसी से राममोहन ने बहुविवाह के विरूद्ध भी अपनी कलम उठाई थी।
- आर्थिक क्षेत्र में राममोहन का दूसरा प्रमुख आन्दोलन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार के विरूद्ध था। इनमें नमक के व्यापार में कम्पनी के एकाधिकार के विरुद्ध आन्दोलन में राममोहन ने जोर-शोर से भाग लिया था। इसमें भी वे गरीब मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए आगे आए।

- राममोहन ने सबसे पहले वेदान्त सूत्र वेदान्त सार, कठोपनिषद्, केनोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् आदि का बांग्ला और अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। पौराणिक कहानियों और धार्मिक पाखण्डों को ही धर्म मान लेने की गलती और धार्मिक संकीर्णता के दलदल में फँसे हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित करने का बीड़ा राममोहन ने उठाया।
- स्त्रियों की दशा सुधारने की दृष्टि से उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर उनके पति की सम्पत्ति में उत्तराधिकार के नियम का समर्थन किया।
- राजा राममोहन राय अन्तर्राष्ट्रवाद के अनन्य समर्थक और मानवतावाद के महान आराधक थे। भारतीय संस्कृति के एक प्रमुख आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में उनकी पूर्ण आस्था थी।
- राजा राममोहन राय शिक्षार्थियों को भी स्थान, जाति एवं धर्म किसी भी प्रकार की संकीर्णता से मुक्त देखना चाहते थे और साथ ही उन्हें देशी-विदेशी किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के जिज्ञासु के रूप में देखना चाहते थे।

यादव, अनीता (2008)* ने 'वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में रूसो और टैगोर के शिक्षा दर्शन' का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- टैगोर ने अपने शिक्षा दर्शन में वर्तमान समय में प्रचलित शिक्षा प्रणाली की आलोचना की क्योंकि वह ऐसी नकारात्मक शिक्षा व्यवस्था को प्रश्रय देती हैं जो केवल दीखावटी ज्ञान प्रदान करती है तथा देश की सांस्कृतिक परम्पराओं से सम्बन्धित जीवन की उच्च मान्यताओं के प्रति बिल्कुल उदासीन है।
- रूसो ने अपने शिक्षा दर्शन में बालक को अपनी रूचि क्षमता आवश्यकता और योग्यता के अनुरूप शिक्षा ग्रहण करने पर जो बल दिया उससे बालक के स्वतन्त्र चिन्तन, स्वतन्त्र व्यक्तित्व और उसके उचित मनोभावों का विकसित होना स्वाभाविक क्रिया है। शिक्षा के प्रति उनका यह दृष्टिकोण हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अधिक परिपक्व बनाने में सहायक हो सकता है।

- टैगोर का विश्वास था कि भारतीय जनता का पिछड़े होने का मुख्य कारण उसकी अज्ञानता है वे चाहते थे कि जनसाधारण में शिक्षा का प्रसार होना चाहिए। इसीलिए उन्होंने जन शिक्षा और ग्रामीण शिक्षा पर बल दिया। उनका मानना था शिक्षा का प्रसार जन सामान्य तक होने से उनमें भावी प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।
- शिक्षा जगत में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं जीन जैक्स रूसी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने सामयिक समस्याओं के निदान तथा ज्ञान को अधिक ऊर्जावान बनाने के क्षेत्र में महती भूमिका निभाई।

सिंह, रेनू (2008)* ने 'भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रुप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में' का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- छत्रपति शाहू जी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह तथ्य पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली भाँति जागरूक थे इसलिये उन्होंने जीवन के कटु सत्यों की उपेक्षा नहीं की शिक्षा के द्वारा बुद्धि मस्तिष्क शरीर आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में भी थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुर्ननिर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहू जी के शैक्षिक विचारों की विशेषता है। ये लोग व्यक्ति की असीमित शक्ति में विश्वास करते थे।
- छत्रपति शाहू जी महाराज ने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकतावाद एवं आध्यात्मवाद से सम्बन्धित बताया है। भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में इस प्रकार का तालमेल बैठाकर और शिक्षा का सही-सही उद्देश्य निर्धारित कर आधुनिक शिक्षा को नयी दिशा प्रदान की।
- छत्रपति शाहू जी के शैक्षिक दर्शन में अध्यापक की गरिमा को स्वीकार कर उसे उचित स्थान प्रदान करने की बात कही गयी जो वर्तमान शैक्षिक जगत की माँग है। आज छात्रों द्वारा अध्यापक को सम्मान न दिया जाना भी शिक्षा के पतन का कारण है। अतएव अध्यापक को सम्मानीय स्थान प्रदान किया जाना आधुनिक शिक्षा की समृद्धि का आधार होगा।

- शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में शाहू जी की विचार धारायें बाह्य रूप से भिन्न होते हुए भी मूलतः एक थी। विभिन्न मार्गों से चलकर उन्होंने एक ही लक्ष्य को सामने रखा और वह था जीवन का शाश्वत मूल्य वह शाश्वत मूल्य जिसकी कि आज आधुनिक शिक्षा में आवश्यकता है। जिसके अभाव में शिक्षा निदेश्य एवं दिशा विहीन हो गयी है तथा युवावर्ग दिगभ्रमित है। ऐसी स्थिति में इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपनाकर शिक्षा को सार्थक एवं जीवनपयोगी बनाया जा सकता है।

सिंह, प्रियंका (2009)* ने 'राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत महापुरूषों में राजा राममोहन राय तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में नवोदय के जिन विचारों का सूत्रपात आधुनिक भारत के पिता राजा राममोहन राय ने किया था, उसे आगे बढ़ाने एवं प्रगति देने का महत्वपूर्ण प्रयास स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया।
- दोनों महान चिन्तकों के धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजनीतिक विचारों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि धार्मिक व सामाजिक विचारों के क्षेत्र में दोनों के विचार धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों व बहुदेववाद की जगह एकेश्वरवाद के क्षेत्र में समाज से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की दूर करने की दृष्टि से दोनों के वैचारिक समानता थी। लेकिन शिक्षा व राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से भिन्नता थी, जहाँ राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी शासन व प्राश्चारक शिक्षा का समर्थन किया तथा संस्कृत के पठन पाठन का विरोध किया।

त्रिपाठी, अरविन्द प्रकाश (2012)* ने 'भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में डाँ० (श्रीमती) एनी बेसेन्ट का योगदान' का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- एनी बेसेण्ट भारत के लिए एक विदेशी महिला थीं इसके बावजूद उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन में खुलकर भाग लिया और भारत में पाश्चात्य भाषा एवं संस्कृति प्रधान शिक्षा के स्थान पर भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति प्रधान शिक्षा की व्यवस्था में बड़ा योगदान दिया।
- भारत के लिए अपार करूणा, अजस्र ममता ने एनी बेसेण्ट ने भारतवासियों के साथ ऐसा जोड़ा कि वह 'अम्मा' बन गई भारतीयों को अज्ञानता की जकड़न से मुक्त कराने के लिए शिक्षा का दीप जलाया, स्वतंत्रता एवं स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया, घूम-घूम कर व्याख्यान दिये, सोते को जगाया तथा नारी को उसकी अस्मिता का बोध कराया काशी को केन्द्र बनाकर अपने कार्य को विस्तार दिया। भारतीयता की उन्नायिका श्रीमती बेसेण्ट को महात्मा गाँधी ने वसन्तदेवी की संज्ञा से विभुषित किया। भारतीय नारी के जीवन से अशिक्षा दूर करने के लिए उन्होंने जिस बालिका विद्यालय की स्थापना की वह आज भी वसन्त महिला महाविद्यालय का रूप धारण कर नारी शिक्षा का कार्य कर रहा है
-
- विदेशी राजनीतिक शक्ति के आघात के विरूद्ध बचाव की व्यवस्था के रूप में देश की प्राचीन संस्कृतियां पुनः सचेत तथा सचेष्ठ हो उठीं तथा अपने अस्तित्व को पुनः आग्रहपूर्वक जताने लगीं। प्राचीन ग्रन्थों का नये मानवतावादी तथा सर्वराष्ट्रवादी दृष्टिकोण से विवेचन किया जाने लगा। प्रायः प्राचीन धर्मशास्त्रों में आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों का बीज ढूंढ निकालने का भी प्रयत्न किया गया।
- 19वीं शताब्दी के शिक्षित भारतीयों ने उस पाश्चात्य दर्शन तथा विज्ञान के प्रकाश में जो उन्होंने प्राप्त किया था. अपने धार्मिक विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा सामाजिक प्रथाओं का पुनः परीक्षण करना आरम्भ कर दिया। इसके फलस्वरूप बढ़ा समाज प्रार्थना समाज, आर्य समाज थियोसोफिकल सोसायटी तथा रामकृष्ण मिशन आदि अस्तित्व में आए जिन्होंने हिन्दू धर्म में सुधार किये।

मिश्र, तीर्थराज (2013)* ने 'भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में डाँ० मेरिया मान्टेसरी का योगदान' का अध्ययन' किया और यह पाया कि—

- डॉ० मेरिया मॉण्टेसरी इटली की प्रथम महिला थी जिन्होंने चिकित्सकीय डिग्री प्राप्त किया था। उन्होंने मानसिक रोगों की चिकित्सा व अध्ययन शिक्षा व मानव विज्ञान के क्षेत्र में कार्य किया। उनका विश्वास था कि प्रत्येक बच्चा एक अद्वितीय क्षमता (प्रतिभा) प्रदर्शित करने के लिए जन्म लेता है न कि एक खाली स्लेट (Blank Slate) की तरह जो कुछ लिखने की प्रतीक्षा करे।
- मॉण्टेसरी की प्रतिभा ने केवल बालक के कार्य की आन्तरिक महत्ता नहीं प्रकट की, लेकिन उन दशाओं को भी जिनसे इनकी उपलब्धि होती है। इसके अलावा उसने यह निःसन्हेह सिद्ध किया है कि इन दशाओं को प्रदान न करके जाग्रत बालक में एक उच्च प्रकार के व्यक्तित्व को मानसिक तौर पर सतर्क, चेतना के केन्द्रीकरण के अधिक योग्य सामाजिक रूप से अधिक व्यवस्थित अधिक स्वतन्त्र, साथ ही साथ अधिक अनुशासित और आज्ञाकारी व्यक्तित्व, एक पूर्ण जीव का विकास किया जाता है जो एक सामान्यीकृत प्रौढ़ का आधार बनता है। यह मॉण्टेसरी की महान उपलब्धि है।
- मॉण्टेसरी प्रणाली का अनुसरण किया जाए ताकि बच्चे की पसन्द प्रायोगिक कार्य प्रकृति व दूसरों की देखभाल और इन सबसे ऊपर जब कार्य मनपसन्द व निर्विहन हो तो उच्च स्तर की एकाग्रता पर पहुंचना मानवेचित प्रदर्शित करता है, जो श्रेष्ठ न केवल शिक्षा सम्बन्धी बल्कि, भावनात्मक व आध्यात्मिक से भरपूर एक बच्चा जो प्रबल रूप में परवाह करता है।
- शिक्षा स्वयं को ज्ञान के नीरस संप्रेषण के नयी पद्धति की खोज तक ही सीमित नही करती इसका उद्देश्य मानव विकास में आवश्यक सहायता प्रदान करना है। चमत्कारिक ऊर्जा से युक्त इस संसार को नये मानव की आवश्यकता है। इसीलिए मानव जीवन उसके सिद्धान्त, आदर्श रीति रिवाज को अवश्य विचार करना चाहिए।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया, जिसमें महात्मा गांधी-पंडित दीनदयाल उपाध्याय, रवींद्रनाथ टैगोर-पंडित मदन मोहन मालवीय, रवींद्रनाथ टैगोर-जॉन डीवी, रवींद्रनाथ टैगोर-रूसो, राजा राम मोहन राय-स्वामी दयानन्द के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन राय, डॉक्टर (श्रीमती) एनी बेसेन्ट, डॉक्टर मेरिया मान्टेसरी, छत्रपति शाहूजी महाराज का दलितों के शैक्षिक उत्थान में योगदान का अध्ययन किया गया।

संबंधित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता को प्रस्तुत समस्या "डॉ चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान" से संबंधित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला। डॉ चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन

डॉ०चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित जी का जन्म टेसू (पलाश) के घने जंगलों के बीच बसे अन्तर्वेद (फतेहपुर जनपद) के 'टीसी' नामक गाँव में 14 जुलाई सन् 1942 में हुआ था। परम भागवत एवं वैष्णव व्याकरण विद्या के पंडित श्री दीनदयाल दीक्षित के पुत्र है। उनकी माँ स्व. देवरती निरक्षर होकर भी अत्यन्त करुण एवं ममत्वपूर्ण स्नेहमयी थी। डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित जी बचपन से ही चंचल स्वभाव के थे।
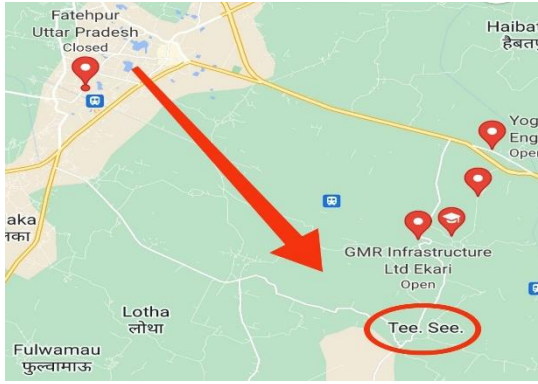
इनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय में संपन्न हुई। कवि ललित के निर्माण में उनके पिता का पाण्डित्य पूर्ण वरदहस्त और बचपन में ही उनके द्वारा काव्य रचना को, प्रेरणा तथा माँ की आँखों का करुण जल ही मिलकर कविता के रूप में अनजाने द्रवीभूत हुआ। उन्ही की प्रेरणा से ये संस्कृत साहित्य के विराट का दर्शन कर सके और हिन्दी के वांगमय का अनुशीलन कर सके। थॉमस हार्डी ने 'Tess of the D' Urbervilles' में अपने ग्रांमाचाल को रेखांकित किया है। उसी प्रकार डॉ. ललित ने अपने गांव 'टीसी' को जो टेसुओं के घने जगलो में बसा है, वहां की प्रकृति का चित्रण किया है। डॉ. ललित की पैतृक पृष्ठभूमि पर जब मै विचार करता हूँ तो ज्ञात होता है कि डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी के पितामह बालगोविन्द छरहरे गौरवर्ण के व्यक्ति थे। गीता का निरन्तर पाठ करते थे तथा मल्ल विद्या तथा युद्ध विद्या में रुचि रखते थे। इनके पिता आचार्य

पं. दीनदयाल दीक्षित संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान थे। पं० दीनदयाल दीक्षित जी सारस्तव चन्द्रिका और सिद्धान्त कौमुदी दोनो विद्याओं के पंडित थे। सिद्धान्त चन्द्रिका उनको इतना प्रिय था कि उन्होंने संभवतः इसी कारण पुत्र का नाम चन्द्रिका प्रसाद रखा। पं० दीनदयाल दीक्षित जी ने प्रारम्भिक शिक्षा विभिन्न संस्कृत पाठशालों में की कर्वी संस्कृत पाठशाला से पूर्ण की जहाँ राहुल सांकृत्यायन भी कभी अध्ययन हेतु आये थे। किन्तु वहां के आचार्यो से संस्कृत में वार्ता करने पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यहां का अध्यापक मण्डल उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर सकता।

अतः पं० दीनदयाल दीक्षित जी चित्रकूट के आसपास वनांचल में परिभ्रमण करने लगे। वही रामनाम के अद्भुत वृक्ष का दर्शन किया जिस वृक्ष से एक तरल लसलसा पर्दार्थ निकलकर रामनाम की आकृति स्वाभाविक रूप से अंकित करता है। इस घटना को देखकर उनका मन द्रवित हुआ और उनमें भगवत् भक्ति का बीजारोपण हुआ। कालान्तर में पं० दीनदयाल दीक्षित जी सेठ गोविन्ददास प्रख्यात साहित्यकार जबलपुर के आमन्त्रण में जबलपुर चले गये। वहां नर्मदा नदी में अर्द्धरात्रि में जल के मध्य खड़े होकर मन्त्री का पाठ किया तथा भैरवी आदि की कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त की। जबलपुर के ही एक सेठ मानिकचन्द के परिवार के लोग निःसन्तान होने के कारण दुखी थे। उन्होंने पं० दीनदयाल दीक्षित जी से पूजा आदि का प्रस्ताव किया इस प्रस्ताव को सुनकर पं० दीनदयाल दीक्षित जी अपने घर चले आये। और टीसी में ही रहकर निःसन्तान दम्पत्ति के लिए पूजा और वृत्त विधि विधान किया जिससे निःसन्तान दम्पति को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इसके कारण जबलपुर

में सेठ गोविन्ददास (साहित्यकार) और सेठ मानिकचन्द (व्यापारी) दोनों परिवारों के बीच पंडित जी की प्रतिष्ठा और लोकप्रियता बढ़ गई। पं० दीनदयाल दीक्षित जी ने भी इस परिवार से कहा कि मेरा व्रत पूर्ण हुआ है मैं चाहता था कि श्रृंगी ऋषि के चरुयज्ञ जिसमें दम्पति को भी यज्ञ में बैठना पड़ता है उसका भी निषेध किया जाये और दूरागत रहकर इस व्रत को पूर्ण किया जाये। इस चर्चा से अनेक निःसन्तान दम्पत्तियों ने प्रस्ताव किये किन्तु उन्होंने पुनः इस प्रकार के अध्यात्मिक प्रयोग नही किये। पं० दीनदयाल दीक्षित जी वाराणसी के सुप्रसिद्ध चक्रवर्ती विद्वान महादेव शास्त्री से प्रभावित थे और चित्रकूट के पं. सुदर्शनाचार्य (वैयाकरण) से भी उनका शास्त्रार्थ हुआ था। उनका गोविन्द चर्तुमुख नामक अपना ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। जिसमें विभिन्न देवताओं का स्तवन किया गया है। सतव्रती के लिए उन्होंने 'पदार्थदात्री, परममार्थ दायिनी सारस्तवत वाचमे सदां' कहकर सरस्वती को पद और अर्थ की देवी अर्थात वागार्थ को देवी, भौतिक समृद्धि की देवी की मान्यता दी है। जो नवीन है जो उनके पाडित्य का प्रमाण देने वाला है उनके कवियों के सम्बन्ध में छन्द भी मार्मिक है जिनमें से तुलसी, लालदास पर लिखी गई उनको प्रशस्तियां प्रकाशित है और कवियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण धारणायें व्यक्त करने वाली है। आयुर्वेद के रसायनों का पं० दीनदयाल दीक्षित जी स्वयं निर्माण करते थे और निःशुल्क औषधियों का वितरण करते थे। धन्वन्तरि औषधालय चलाते रहे तथा ग्रामीण अंचलों में स्वास्थ्य प्रदान करते रहे। उनके पारद आदि के प्रयोग नितान्त मौलिक हैं। प्रारम्भ में उन्होंने ही अपने पुत्र को कविता लिखने की प्रेरणा दी और इस प्रकार उनका अपने पुत्र डॉ. ललित को प्रेरणा देने में विशिष्ट योगदान है।

3.2 डॉ. 'ललित' जी की वंश परम्परा
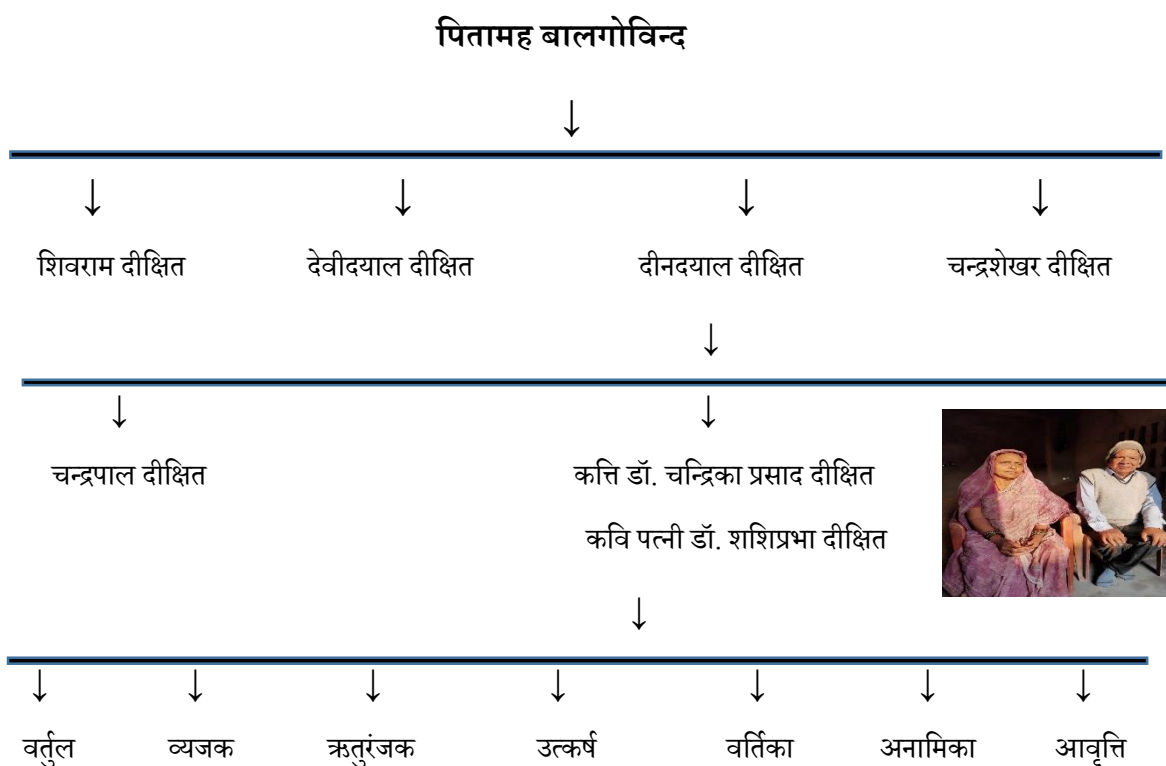
3.3 अध्ययन यात्रा

डॉ.चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी ने प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव टीसी से तथा जूनियर हाईस्कूल की परीक्षा हस्ता नामक स्थान से प्राप्त की थी। हाईस्कूल तथा इंटरमीडिएट की परीक्षा राजकीय इंटर कॉलेज फतेहपुर विज्ञान कृषि वर्ग से उत्तीर्ण की थी। इसके बाद आगे की शिक्षा हेतु आगरा चले गए जहां पर उन्होंने स्नातक की परीक्षा आगरा विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की थी। कानपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से ही पी.एच.डी की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। डॉ ललित जी ने डि.लिट. की परीक्षा रांची विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की थी।

3.4 गृहस्थ जीवन

डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी का विवाह संस्कार वैशाख सुदी 2,संवत् 2025 विक्रमी (29 अप्रैल सन् 1968) को कानपुर में पंडित सिद्धनाथ त्रिवेदी के द्वितीय पुत्र स्वर्गीय घनेश्वर प्रसाद त्रिवेदी पत्नी देवहुती त्रिवेदी की एकमात्र कन्या शशि प्रभा से हुआ। वे विवाह के अवसर पर 25 वर्ष 7 माह 4 दिन के थे शशि प्रभा एसएन सेन बालिका विद्यापीठ कानपुर में इंटर की छात्रा थी। वे गौरंग सुंदर अंगों वाली शाश्वत सरस्वती की प्रति मूर्ति प्रतीत होती है। शशि प्रभा के पिता घनेश्वर प्रसाद त्रिवेदी अपनी एकमात्र प्रिय बेटी को पढ़ा लिखा कर डॉक्टर बनाना चाहते थे किंतु उनके निधन के कारण उनका यह स्वप्न नहीं पूरा हो पाया शशि प्रभा ने अपने अध्यवसाय व कठोर परिश्रम द्वारा गृह कार्य के दायित्व का निर्वाह करते हुए बी.ए. एम.ए. बी.एड. तथा एम.एड की परीक्षा दी और हिंदी में पीएचडी उपाधि प्राप्त की।

उन्होंने पुराण एवं धार्मिक ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन किया उन्हें हिंदी के अतिरिक्त पंजाबी भाषा का भी ज्ञान था। उन्होंने सबसे पहले महाकवि चंद्र दास के ग्रंथों में पंजाबी के शब्द होने का संकेत डॉ चंद्रिका प्रसाद दीक्षित (अपने पति) को शोध कार्य के दिनों में बताया जिससे हिंदी साहित्य में चंद विषयक शोध को उच्च रूप दिया जा सके।

3.5 अध्यापन यात्रा

डॉ. ललित को साहित्य साधना को और उनके व्यक्तित्व को कवि अनुसंधानकर्ता, अध्यापक सम्पादक पुरातत्त्वविद् एवं सांस्कृतिक चेतना के रूपों में बांटा जा सकता है कथाकार, कवि एवं नाटककार 'अजित पुष्कल' के शब्दों में, ***"डॉ. ललित ने शोध के द्वारा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास में भारी सहायक महत्व पूर्ण ग्रन्थों की खोज की है वे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।"*** कवि के अन्वेषक दृष्टि की अभिशंषा करते हुए, मगध विश्व विद्यालय के डॉ. रामकृष्ण प्रसाद मिश्र का कथन है संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, बंगला के काव्य व्याकरण ज्योतिष और पिंगल आदि को दुलर्भ पाण्डुलिपियों को खोजकर डॉ. दीक्षित की मौन साधना ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की है। उनकी खोजों से भारत के सांस्कृतिक इतिहास को एक नया आलोक मिलेगा। डॉ. ललित दीक्षित ने विद्यार्थी जीवन से ही काव्य रचना प्रारम्भ की थी उनकी पहली कविता 'गांधी के प्रति' कानपुर से प्रकाशित होने वाले 'प्रताप' में स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा प्रकाशित एवं प्रशंसित हुयी।"

डॉ. ललित 1961-62 से निरन्तर काव्य रचना में लीन रहे तथा वर्ष 1971-72 से अब तक अनुसन्धान कार्यों के लिए समर्पित हैं। कविता के अनुसंधान, काव्यालोचन के पाठालोचन, समाज से संस्कृति आन्दोलन तक उनकी यात्रा एक समर्पित मनीषी की कालजयी यात्रा रही है। कवि दिनेश देवराज के शब्दों में "डॉ. ललित अभावों से अविचलित यश से उदासीन शोध के शिलालेख हैं।"

डॉ. ललित ने चंददास ग्रंथावली के अन्तर्गत राम विनोद महाकाव्य (सं. 1804) मीता ग्रन्थावली से (सं. 1736) लालदास कृत अवध विलास (सं. 1732) जैसी कृतियों का सम्पादन करके सचमुच हिन्दी वाङमय की स्वाभिमानी तथा गौरव मयी वृत्ति की वृद्धि की है। सम्प्रति वह पं० जवाहरलाल नेहरु महाविद्यालय बांदा में हिन्दी विभाग के वरिष्ठ उपाचार्य एवं चन्ददास शोध संस्थान के निदेशक रहे। वे सन्तकवि अनुसंधान साहित्य के लिए समर्पित बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के सर्वाधिक गौरव प्रतिमानक जे०एन० कॉलेज, बाँदा में 1971 से हिन्दी में विभाग में कार्यरत एवं अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से साहित्यिक क्रान्तिधर्मा डॉ० ललित जी ने हजारों छात्र-छात्राओं को ललित कंठ से, नियत कविताओं से रसाश्रावित कर शोध के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर 2002

में हिन्दी विभाग को सर्वोच्च ऊँचाईयाँ प्रदान कर हिन्दी विभाग के भूतपूर्व हो गए, किन्तु हिन्दी प्रेमी छात्र और छात्राएँ अब भी उनके गीत गाते हैं, उनकी पठन-पाठन शैली का स्मरण कर आज भी छात्र रसाप्लावित होते हैं। उनकी कक्षाओं में हिन्दी से इतर विषयों के छात्र भी खाली समय में से बैठकर साहित्य के सरोवर के हंस बनने के लिए आकुल हो उठते थे, जनमानस में पूर्व होकर भी वे अभूतपूर्व हैं। वे मेरे पितृपाद हैं।

हिन्दी विभाग को गौरवान्वित करने वाले आचार्य डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' ने 'संत कवि चंद्र दास का काव्यात्मक मूल्यांकन' विषय पर कानपुर विश्वविद्यालय से डॉक्टर आफ फिलासफी की उपाधि तथा 'महाकवि चंद का पुनर्मूल्यांकन रासो एवं रासोत्तर कृतियों के परिप्रेक्ष्य में' शीर्षक पर डिलीट की सर्वोच्च उपाधि रांची विश्वविद्यालय से प्राप्त की। महामहिम राष्ट्रपति ने उनका नाम पद्मभूषण उपाधि के लिए आमन्त्रित किया है। विक्रम शिला विश्वविद्यालय ने डॉ० ललित के सम्मानार्थ डी. लिट् की उपाधि प्रदान की।

3.6 सामाजिक योगदान

1973 से अब तक लगभग 43 वर्षो से राष्ट्रीय रामायण मेला, चित्रकूट की बौद्धिक, सभाओं का सफल संचालन, जिसमें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विद्वानों ने सहभागिता की विश्व के सबसे बड़े जन संगम वाले महाकुंभ मेला, प्रयाग मे आंखों देखा प्रसारण हेतु कॉमेंटेटर (उद्घोषक) के रूप में चर्चित एवं पुरस्कृत हुए। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के द्वारा 25 कविताएं तथा 15 वार्ताएं प्रसारित की हैं। कालिंजर और चित्रकूट टेलीफिल्म (भारत सरकार द्वारा निर्मित) मे शीर्षक गीतों के रचनाकार भी रहे हैं। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन ढोलपुर पश्चिम बंगाल के हिंदी पाठ्यक्रमों के सलाहकार सदस्य भी रहे हैं।

चित्रकूट प्रेरणा का स्रोत इस विषय पर आकाशवाणी लखनऊ ने एक वार्ता प्रसारित की थी आज से करीब 32 वर्ष पूर्व डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी ने आकाशवाणी लखनऊ से चित्रकूट: प्रेरणा स्रोत एक वार्ता प्रसारित की थी जिसमें चित्रकूट में एक विश्वविद्यालय और एक हवाई पट्टी के निर्माण का प्रस्ताव रखा। जिसे नाना जी ने सुनकर दोनों बातों को मूर्त रूप दिया। चित्रकूट की तरह कानपुर में भी कोई विश्वविद्यालय नहीं था जिस पर डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी ने घाटमपुर के पास भद्रस में ब्रज भाषा के कवि राय देवी प्रसाद

चौधरी 'पूर्ण' की स्मृति पर कहा कि हम लोग ग्रामीण स्तर पर एक विश्वविद्यालय खोलेंगे। कालका प्रसाद भटनागर वाइस चांसलर विश्वविद्यालय आगरा जब रिटायर हुए तो उन्होंने कहा कि आप लोग ना परेशान हो हम इसको कानपुर में अवश्य परिकल्पित करेंगे और उनके प्रयासों से कालांतर में कानपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इस प्रकार कानपुर विश्वविद्यालय, ग्रामोदय विश्वविद्यालय तथा चित्रकूट में हवाई पट्टी की संकल्पना के पीछे डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी का ही योगदान था।

3.7 शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान

डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी ने शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसमें हिंदी के क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी की हिंदी पाठ्यक्रम समिति में अध्यक्ष भी रहे। डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' ने विश्व भारती विश्वविद्यालय शान्तिनिकेतन ढोलपुर पश्चिम बंगाल में हिंदी के पाठ्यक्रम को संशोधित करवाया जहाँ पर एम.ए. की कक्षा में उनकी कृति 'अभिशप्त शिला' का शिक्षण कार्य किया जाता था। कानपुर विश्वविद्यालय में बी.ए.के पाठ्यक्रम में आधुनिक हिंदी की कहानी नामक किताब चलती थी जिसका सम्पादन डॉ ललित जी के द्वारा ही किया गया था। डॉ ललित का हिंदी के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा तथा हिंदी के उत्थान के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। इन्होंने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित अनेक गोष्ठियों में प्रतिभाग किया एवं शिक्षा एवं साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान किये।

3.8 पुरस्कार

डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी प्रतिभा के धनी हैं उनको समय-समय पर अनेकानेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसका विवरण निम्नलिखित है—

1. रामायण मेला सम्मान 1982
2. साहित्येन्दु उपाधि 1984

3. तुलसी सम्मान 1986
4. राष्ट्रकवि पं० सोहनलाल द्विवेदी द्वारा 'राष्ट्रकवि अलंकरण' 1987
5. उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा जयशंकर प्रसाद पुरस्कार 1987
6. भारतीय साहित्यकार संघ (महादेवी वर्मा द्वारा संस्थापित) द्वारा तुलसी पुरस्कार 1987
7. प्रशासनिक न्यायाधीश पंडित अयोध्या नाथ दीक्षित द्वारा प्रशस्ति पत्र 1989
8. बुंदेलखंड साहित्यकार संसद द्वारा सारस्वत अभिनंदन 1989
9. अंतर्वेद साहित्य मंडल द्वारा राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार 1990
10. कालिंजर महोत्सव सम्मान 1991
11. डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन द्वारा आशुकवि सम्राट 1993
12. मानस संगम, कानपुर द्वारा तुलसी सम्मान 1994
13. विश्वबंधु प्रयाग द्वारा 'अभिनव विद्यापति' 1994
14. बुंदेलखंड विश्वविद्यालय शिक्षक सम्मान 1994
15. विश्वभारती शांतिनिकेतन द्वारा रवींद्र सम्मान 1995

16. इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर कैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा, ट्वन्टीन्थ सेंचुरी अवार्ड 1998
17. अंतरराष्ट्रीय विश्व हिंदी सम्मेलन एवं यूनेस्को द्वारा विश्व के कई राष्ट्रों के संयुक्त तत्वाधान में विश्व हिंदी सहशताब्दी सम्मान 2000
18. इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर कैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा, आउटस्टैंडिंग अवार्ड 2000
19. राष्ट्रकवि सम्मान 2000
20. प्रो० विष्णु कांत शास्त्री, उत्तर प्रदेश राज्यपाल द्वारा मानस भारती सम्मान 2004
21. मंजुल मयंक पुरस्कार 2006
22. रांची विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. उपाधि

रांची विश्वविद्यालय

प्रमाणित किया जाता है कि

चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित

को,

जिन्होंने शक संवत् के फाल्गुन मास

(तदनुसार मार्च ई०)

में आयोजित

डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर (मानविकी)

परीक्षा उत्तीर्ण की,

आज यह उपाधि प्रदान की गयी ।

शोध का विषय :

"महाकवि चंद का पुनर्मूल्यांकन: रासो एवं रासोत्तर कृतियों के परिप्रेक्ष्य में"

रांची विश्वविद्यालय, रांची

तिथि

कुलपति
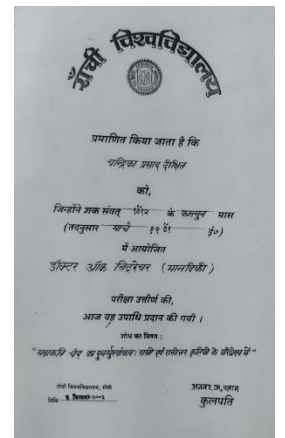
23. विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा 1993 में डि.लिट. (मानद उपाधि), जगद्गुरु रामभद्राचार्य विश्वविद्यालय चित्रकूट द्वारा 2013 में डि.लिट. (मानद उपाधि), हिंदी सभा सीतापुर द्वारा सारस्वत पुरस्कार 2015
24. हिंदी राष्ट्र गौरव सम्मान 2016

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी द्वारा कुल 7 पुस्तकों की रचना की गई, जिसका विवरण निम्नलिखित है—

4.1 टीसी का टेसू भरा उपवन

डॉ. ललित जी की ये प्रारम्भिक कृति है। थॉमस हार्डी ने जिस प्रकार अपने टेस में ग्रामीण अंचल का वर्णन किया है उसी प्रकार कवि ने अपने ग्राम टीसी के प्राकृतिक सौन्दर्य विशेष रुप से टेस (पलाश) वन के शब्द सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया है। इन कविताओं में जहाँ एक और कवि प्रकृति के प्रति रागात्मक सम्बन्ध है वहीं प्रकृति के मौलिक रूपों की भी व्यंजना की गई है। गाँव के तालाबों में तैरते हुए सिंघाड़े की बेलो, ताल के ही समीप महकने वाले ताजे गुड़ की गन्ध और मौलश्री के वृक्ष से झरने वाले स्वेतवर्णी पुष्पों को गन्ध के विम्ब मनोहारी है। एक दूसरी चिन्ता जो इन कविताओं में व्यक्त हुई है वह है कवि के घने जंगलों का उजाड़ने की पीड़ा। जिन जंगलों के बीच झरबेरी और मकोय की ताजी लहलहाती गन्ध है वही सरकते हुए नेवले और

झुरमुट में चहचहाती हुयी चिड़ियों की कलरव ध्वनियाँ। कुल मिलाकर आंचलिक सौन्दर्य के लिए कवि की ये प्रारम्भिक कृति 'मील के पत्थर' की भाँति सिद्ध होती है।

4.2 तुलसी नही मरेगा
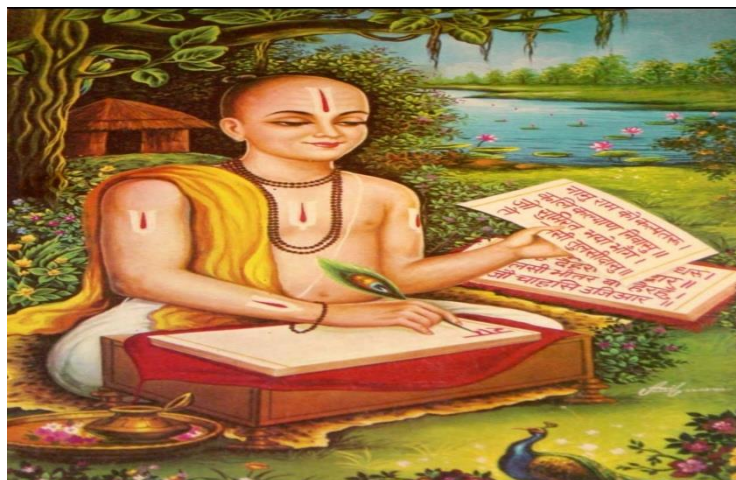
यह एक लम्बी कविता है जिसमें कवि ने तुलसीदास व रत्नावली के सम्बन्धों को मनोवैज्ञानिक आधार भूमि पर रेखांकित करने का प्रयत्न किया है। राग से विराग की ओर कवि की यात्रा में रत्ना इसमें उभारे गये हैं। उदाहरण विरक्ति से अधिक कवि की अनुरक्ति बनी है। वह केवल अनिंद्य रूपसी ही नहीं काव्य विदुषी भी है जिस कवि के जीवन में व्यष्टि राग की अपेक्षा समष्टि राग को जाग्रत किया है। तुलसी के कई अछूते आयाम भी इसमें उभारे गए है

" गली गली जो राह भटकता
एक फटी झोली लटकाये
कौन जानता था कि भिखारी
झोली में इतिहास छिपाये।"

" पांव में झुके पड़े
प्रिया ने पांव पिया का पकड़ लिया
और एक पल एक दूसरे को जकड़ लिया राग हो गया,

एक मोड़ लेकर विराग फिर निकल पड़ा सन्त शलभ वह रामनाम की

दीप शिखा पर मचल पड़ा।"

"अधरों का मधुपान नही

अनुराग हुआ प्रभु के चरणों से

तुलसी तुलसीदास हो गया

सपने बदले आचरणों से।

रूप रस वासना ही तो तपकर

आज लोक साधना बनी

एक सन्त को पा स्वदेश की

परम्परा हो गई धनी ।।"

'अगर सृष्टि में राम रहेगा

तो तुलसी भी नहीं मरेगा'

4.3 शिरीष के फूल

कवि की यह अप्रकाशित कृति है जिसमें कवि ने महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध नाट्य कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के मार्मिक प्रसंगों तथा संस्कृत श्लोकों का छायानुवाद और भावानुवाद दोनों ही किये हैं।

कवि को इन अनुवादों में सफलता और लोकप्रियता दोनो प्राप्त हुई है। तुलसी के लिए कतिपय छन्दों को यहाँ उद्धरण रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

"भ्रमर गन्ध को छू न सके वह ऐसा एक सुमन है।
अनभोगा मधु एक अभी अनभुक्त एक यौवन है
किसी स्वयंवर की एक माला का यह अन विधा रत्न है।
ललित अरुण अधरों में आलिंगित न शेष चुम्बन है
किसके लिए कला का बोलो संचित क्वारापन है।
पवित्रता ही इस धरती में सबसे बढ़कर धन हैं ।।"

महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध कृतिअभिज्ञान शाकुन्तलम्" में शकुन्तला के कौमार्य से सम्बन्धित श्लोक है—

"अनाघ्रात पुष्पं किसलयमलूनं कररु है।
रनाविद्ध रवं मधुनवामनास्वादितरसम्
अखण्ड पुष्पानां फलमिव च तद्रूपमनहां
न जाने भोक्तार कमिह समुपस्थास्यति विधिः ।।"

उपर्युक्त श्लोक में न जाने किम भोक्तार' भाव को व्यक्त किया गया है अर्थात इस अनिंद्य सौन्दर्य का भोक्ता कौन होगा कहकर महाकवि कालिदास ने जहां श्रंगार को संकेतों के माध्यम से व्यक्त कराया है, वहीं साथ ही श्रृंगार के भोक्ता पक्ष को भी प्रस्तुत कराया है। अर्थात दुष्यन्त की ओर संकेत किया है। वही डॉ. ललित ने इस छन्द के भावानुवाद में अपनी ओर से एक नई मौलिक उद्धावना भी की है। "पवित्रता ही इस धरती में सबसे बढ़कर धन है।" ऐसा लगता है जैसे महाकवि कालिदास के भोक्ता भाव से भी कुछ और ऊँचे कौमार्य के अखण्ड सौन्दर्य

पर कवि की दृष्टि गई हो और जहाँ कवि ने कौमार्य को पूर्णता प्रदान करने का नया उपक्रम किया हो। यद्यपि भारतीय श्रंगार में नारी का सौन्दर्य बहुत कुछ सौभाग्य काल के आधार पर पति के पास जाकर परिपूर्ण होता है। किन्तु डॉ. ललित कीमान्यता इससे भिन्न प्रतीत होती है नारी को पुरुष के आश्रय से रहित होते हुए भी पूर्ण रूप में देखने के पक्षधर है। स्त्री और पुरुष दोनों स्वयं में दोनों पूर्ण इकाई है। जबकि भारतीय दर्शन में स्त्री और पुरुष का मिलाकर ही पूर्णता का दर्शन स्वीकार किया गया है।

भारतीय दर्शन के विरोध में डॉ. ललित को ये कवितायें नही प्रभावी होती वे स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हैं-

" एक पुरुष बैठा होता नारी के भीतर

और पुरुष के भीतर भी होती नारी

होती है शिव में शक्ति

शक्ति में शिवा रूप अधिष्ठित।"

दोनों मिलकर एक अर्द्धनारीश्वर होते हैं, भारतीय अर्द्धनारीश्वर की यह परिकल्पना शिरीष के फूलों में एक नये रुप में नई गमक लेकर प्रस्तुत हुई है।

4.4 ललित काव्य मंजरी

मंजरी आम की बौर तथा मंजरी भक्ति साधना में मंजरो भाव के अर्थ में प्रयुक्त है इसमें लगभग 51 कवितायें है। जो प्रकृति से लेकर परम सत्ता तक के सोपानों को व्यक्त करने वाली है। प्रकृति में जो भाव उद्रायन छवियाँ पाई जाती है वे किसी चेतन विशेष के स्फुलिंग है इसी भाव को लेकर इस संकलन के गीत अपनी दोहरी भूमिका रखते हैं। एक ओर प्राकृतिक और नैसर्गिक रूप शोभा और दूसरी ओर भावजगत में उठने वाली भक्ति और साधना की विशेष रूप से योग साधना की मधु भूमिका में व्यक्त हुई है। ललित मंजरी में कवि ने मुक्तकों के माध्यम से प्रकृति सौंदर्य प्रेम और राष्ट्रीय भावनाओं की स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त की है।

प्रीति का सौदा न चालो गांव में। बात मंगनी की न डालो दांव में।

रूप की बाजार के सौदागरो तुम नहीं जंजीर डालो पांव में ।।

किसी किसी को प्यार मिला पर खोकर प्यार न अनचाहे हों ।

गाने को तो गीत मिला पर रोने को आंसू आहें हों।।

4.5 सेन्डार पैटाफी की कविताओं का अनुवाद

हंगरी के प्रसिद्ध सेन्डार पैटाफो एक सैनिक कवि थे और उन्होंने अपनी बेहद खूब सूरत और नौजवान पत्नी के लिए ही कवितायें लिखी थी। डॉ. ललित ने अपने कवि मित्र कृष्णमुरारी पहाड़िया से सेन्डार पैटाफो की कविताओं का एक अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा और सुना था और उन्ही के अनुरोध पर इन कविताओं का जो हंगरी भाषा के मूल से अंग्रेजी में अनूदित की गई थीं। उन्हें हिन्दी में अनूदित किया। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द और अनुवाद की शैली में इन कविताओं का एक विशेष महत्व है।

'आलोचक निष्ठुर चट्टाने वा नर संचार।

वसंत दरवाजे के पपा निहारो यह मधुमयी बयार॥

रूप रंग रस गंध दृश्य का यह अनुपम विस्तार।

चट्टानें निष्ठुर आलोचक हुआ न रस संचार" ॥

4.6 किस संज्ञा से तुम्हे पुकारु
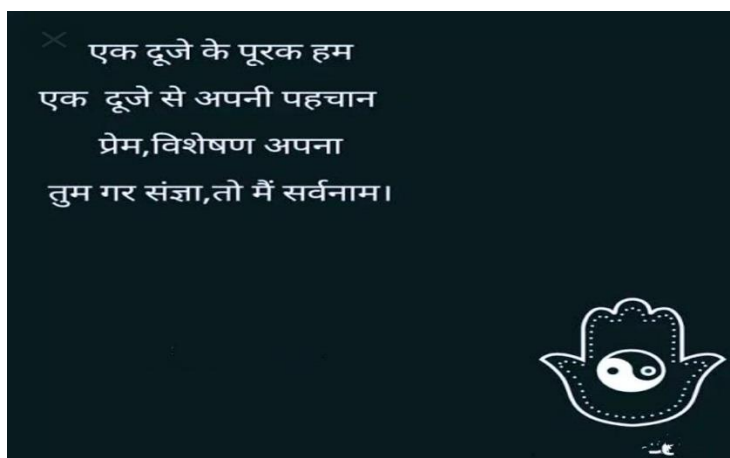
इस संकलन में कवि ने प्रलय भावों को आधार बनाकर गीतो की रचना की है इन गीतो की संख्या 11 है।

"कचनार तुम्हारी आंखों में, नेह में यदि जीत है तो हार भी है।

विश्व गाता रहा गान रोता रहा, यही तो प्यार की पहचान है।"

आदि प्रमुख गीत है। किस संज्ञा से तुम्हे पुकारु का प्रतिनिधि गीत है कवि ने अपनी पत्नी के लिए इन कविताओं की रचना की है जिसमें ज्वलित तापस और अग्नि परिक्षित श्रृंगार के रूपों को भी व्यक्त किया गया है। सौन्दर्य की उद्द्भावनों को कवि ने मिथ्या कोटि की संज्ञा दी है 'मर्त्य देह से हो अर्मस्य स्नेह राग का।" संचरण ही इन गीतो का मुख्य प्रतिपाद्य है। आध्यात्मिक कवियों को प्रेम परक चित्रण से ये एन्द्रिय सम्बन्धों के बीच से अतीन्द्रिय सुख का रहस्य भी इन गीतों में उन्मीलित है। देह गन्ध को छोड़कर कवितायें कुछ भिन्न भूमि पर खड़ी

है। कवि ने पत्नी को प्रेयसी माना है। और कहा है कि वह इतनी सुंदर है कि उसे किस नाम से पुकारु डॉ० ललित जी ने किस संज्ञा से तुम्हें पुकारें, कविता में भावनुवाद प्रस्तुत किया है।

किस संज्ञा से तुम्हें पुकारू तुम परिमल किंजल्क राग से अलंकार अनलंकृत होते।

मना प्रकृति के स्पंदन से अचल शिखर सब झंकृत होते।।

ध्वनि कंपित संगीत प्रीति से कंपते जिस क्षण प्राण तुम्हारे।

उस क्षण प्रेयसि तुम्हीं बता दो किस संज्ञा से तुम्हें पुकारू ।।

4.7 अभिशप्त शिला

अभिशप्त शिला-

कथा योजना-अभिशप्त शिला में कवि की भावना प्रमुख रूप से विद्यमान है। भावना प्रधान काव्य का महत्व अकाट्य है। इस काव्य में जीवन व्यापी विराट सत्य का सौन्दर्य बोध है, कर्म का अखण्ड शोध है। रुप प्रधान होने के कारण समाजोन्मुख तथा मुख है। इसमें नारी अर्द्धनारीश्वर की भूमिका में चित्रित है। कला कलाकार

से अलग नहीं रह सकती, शक्ति शिव से अलग नहीं रह सकती। यह मानव चेतना के व्यापारों को मूर्तित करतीकरती है। रूपक तत्व होने के साथ-साथ उसमें प्रगति तत्व भी है। वह सभ्यता के विकास को रेखांकित करती है। अभिशप्त शिला की मूल चिन्ता श्रमजीवी कलाओं से जीवन का मौलिक रुपान्तरण है।

अभिशप्त शिला इन्द्र गौतम और अहल्या की पौराणिकता में रुपक तत्व को खोजकर उसे आधुनिक संवेदनशीलता प्रदान करती है। यह भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक संरचना के लिए पार्थिक जगत की श्रमिक संवेदना को केन्द्रीय आधार बनाती है। यह भारत की सांस्कृतिक चेतना की प्रतिनिधि एवं मौलिक काव्य है अभिशप्त शिला की वस्तु योजना न कल्पना लोक की उपज है न पौराणिकता को पुनरावृत्ति युगोन संघर्षो से फूटती हुई कान्ति और नई सदी की सास्कृतिक चेतना की निर्मित इस काव्य की मूल प्रस्तावना है। मनुष्य मात्र की समानता पर नये सांस्कृतिक समाज की रचना आधारित होगी। नारी जीवन के प्रति उपेक्षित संवेदना का विस्फोट ही इस प्रबन्ध की मूल परिणति है। सामाजिक जीवन के मौलिक परिवर्तन में नारी की अस्मिता राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और मानवीय गौरव बोध की समस्यायें ज्वलन्त एवं विकारल है। नारी के सामाजिक उत्पीड़न से फूटकर बहने वाली कविता कर्म द्वारा मुक्ति की सिद्धि की प्रस्तावना तैयार करती हैं। 'अभिशप्त शिला' में वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में विखरी हुई अहल्या विषयक सामग्री को नये सन्दर्भ एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सार्वभौमिक संवेदना के रूप में संयोजित किया गया है। एक व्यक्ति के भीतर चेतना के विभिन्न स्तर है। उसकी उच्चतर चिन्तनशीलता ही गौतम, उस व्यक्ति को अखण्ड वृत्ति अहल्या एवं उसकी एन्द्रिक कर्म शक्ति ही इन्द्र है। इस प्रकार अभिशप्त शिला को अन्तर्वस्तु सृष्टि के प्रत्येक मानव को चेतना में घटित होने वाली विराट कथा है। प्रायः अहल्या गौतम और इन्द्र को शरीरी व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया गया है। गौतम और इन्द्र दोनो अहल्या पर मुग्ध है किन्तु दोनो की मानसिक संघटना में मात्रा भेद है। अहल्या और गौतम के विश्लेषण को कला और नैतिकता का सम्बन्ध विच्छेद कहा गया है। इस प्रबन्ध को चर्या, छदम, वृत्ति, विश्लेषण बोध चिति कर्म एवं सन्तुलन सर्गों में सूत्र बद्ध किया गया है जो विवेक पूर्ण समाज संरचना के केन्द्रीय घटक है। अभिशप्त शिला की कथावस्तु का विन्यास डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित जी ने किया है। अभिशप्त शिला के कवि डॉ० ललित ने अहल्या की पौराणिक कथा के सूत्रों को मनोविज्ञान से युक्त करके युगानुरुप एवं मानवीय चेतना के इतिहास के रुपक के रूप में उस प्रथम बार इतने विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। अभिशप्त शिला के प्राक्कथन में कवि ने इस और संकेत

किया है। अहल्या और गौतम का परिचय एवं प्रथम मिलन का वर्णन प्राचीन साहित्य में मिलता है अहल्या विधाता द्वारा रच जाती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा गौतम द्वारा पूर्ण की जाती है। लेकिन पुनः विधाता को यह चिन्ता होती है कि अहल्या का वरण किससे होगा, क्योंकि इसको वरण करने का अधिकारी पात्र तो केवल ऋषि गौतम ही है। अभिशप्त शिला में कवि ने प्रायः इसी घटना का उल्लेख किया है—

"राग वृत्ति से जब सृष्टा ने सृष्टि बनायी 'ने'

और पल्लवित होने को मेरे घर आयी।

मुग्ध तपोवन के कोमल निशीथ सपनों में,

बसन्ती यौवन की वह पावन छवि छायी ।"

पंचम अध्याय

शैक्षिक विचारधारा

5.1 शैक्षिक विचारधारा

शिक्षा का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। शिक्षा 'शिक्ष्' शब्द से बना हुआ है। प्रेरणाओं से बना हुआ है। सदाचार से जुड़ा हुआ है। शिक्षा हमारी आत्म उन्नति के लिए प्रकाश का स्तंभ पैदा करती है। शिक्षा व्यक्ति को समझने के लिए व्यक्ति के भीतर पूरे संकल्पों को जगाने के लिए, उसके संपूर्ण विकास के लिए एक उत्तरदायित्व की भावना जागृत करती है। शिक्षा के द्वारा ही क्रांति संभव है। शिक्षा के क्षेत्र में एक नारा भी दिया था, पर स्त्री में माता बहन कन्या की भावना करो, पर पुरुष में पिता, भाई और बंधु की भावना करो। इस तरह की भावना करने से एक नैतिक वातावरण पैदा होगा। धर्मनिष्ठ समाज पैदा करें। धर्म के प्रति आदर का भाव पैदा करें। शिक्षा के लिए यह भी बहुत जरूरी है कि हम अपनी भारतीय परंपराओं को जोड़ें और उन भारतीय परंपराओं के मूल को समझें। मूल का अर्थ होता है मौलिकता जैसे जड़ पेड़ के लिए जरूरी है। आसमान से उतर आज धरती से बात करो जो भेद न पत्तों से महसूस करे उसे जड़ से याद करो।

5.2 सामाजिक शिक्षा

शिक्षा के सामाजिक आधार का अर्थ यह है कि शिक्षा की व्यवस्था समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और आदर्शों के अधार पर की जानी चाहिए। शिक्षा के द्वारा बालकों में ऐसे सामाजिक गुणों का विकास किया जाना चाहिए जिससे वे अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें, अधिकारों का उपयोग कर सकें और समाज तथा राष्ट्र के प्रति योग्य कुशल, जागरूक और समर्पित नागरिक बन सकें। शिक्षा के द्वारा उन्हें समाज के साथ अनुकूलन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण का आधार उस समाज का जीवन दर्शन समाज की संरचना और उसकी धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति होनी

चाहिए। इस प्रकार शिक्षा का सामाजिक आधार इस बात पर बल देता है कि शिक्षा का आधार समाज हो। शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास हो जिससे समाज का भी उत्तरोत्तर विकास हो सके।

5.3 अनुशासन

शिक्षा बालक के विकास के लिए अनुशासन में रह कर हर नियम-कानून को मानने के लिये व्यक्ति को तैयार करती है। अनुशासन कुछ ऐसा है जो सभी को अच्छे से नियंत्रित किये रखता है। ये व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है और सफल बनाता है। हम में से हर एक ने अपने जीवन में समझदारी और जरूरत के अनुसार अनुशासन का अलग अलग अनुभव किया है। जीवन में सही रास्ते पर चलने के लिये हर एक व्यक्ति में अनुशासन की बहुत जरूरत पड़ती है। अनुशासन के बिना जीवन बिल्कुल निष्क्रिय और निर्थक हो जाता है क्योंकि कुछ भी योजना अनुसार नहीं होता है। अगर हमें किसी भी प्रोजेक्ट को पूरा करने के बारे में अपनी योजना को लागू करना है तो सबसे पहले हमें अनुशासन में होना पड़ेगा। अनुशासन दो प्रकार का होता है एक वो जो हमें बाहरी समाज से मिलता है और दूसरा वो जो हमारे अंदर खुद से उत्पन्न होता है। हालाँकि कई बार, हमें किसी अनुशासित व्यक्ति से अपनी स्व अनुशासन आदतों में सुधार करने के लिये प्रेरणा की जरूरत होती है। हमारे जीवन के कई पड़ावों पर बहुत से रास्तों पर हमें अनुशासन की जरूरत पड़ती है इसलिये बचपन से ही अनुशासन का अभ्यास करना अच्छा होता है। स्व-अनुशासन का सभी व्यक्तियों के लिये अलग-अलग अर्थ होता है जैसे विद्यार्थियों के लिये इसका मतलब है कि वे नियमों के शासन में रहकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

5.4 गुरु शिष्य संबंध

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध समर्पण के आधार पर टिका होता है। जीवन को पार करने के लिए गुरु रूपी सारथी का विशेष महत्व होता है। शिष्य के लिए तो गुरु साक्षात् भगवान् ही होता है। वह समय-समय पर

समुचित मार्गदर्शन कर शिष्य को आगे बढ़ाता रहता है। सफलता की दिशा में बढ़ना हो तो गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य रूप से लेना पड़ता है। आत्मा-परमात्मा संबंधी ज्ञान गुरु के सहारे ही होता है। पुस्तकें पढ़ कर कोई उपदेशक तो बन सकता है, पर उसमें गहराई तक उतर कर हीरे-मोती निकालने का ज्ञान गुरु ही देता है। गुरु सर्वदा अपने शिष्य का हित ही करता है। उनके चरणों में समर्पण कर देने के बाद आगे का मार्ग गुरु स्वयं साफ करता है। अर्जुन ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया तो भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता का वर्णन कर उनका मोह व अज्ञान नष्ट कर दिया। उद्धव को अपने ज्ञान का इतना अहंकार हो गया कि वह अपने आगे सबको तुच्छ समझने लगे। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें गोपियों के पास भेज कर भक्ति और समर्पण की शक्ति का महत्व समझाया और उनके ज्ञान के अहंकार को तोड़ा। इस प्रकार अपने शिष्यों में अहंकार बढ़ते देख गुरु सहन कर नहीं पाता, क्योंकि अहंकार बड़ा ही घातक होता है। वह आदमी को पतन के मार्ग पर ले जाता है। गुरु अपने शिष्य को निरहंकार बना कर उसे उत्थान की ओर ले जाता है। सम्पूर्ण समर्पण की स्थिति में सद्गुरु शिष्य की अन्तरात्मा में अपना स्थान बना लेता है तथा वहीं बैठ कर शिष्य का मार्गदर्शन करता है । अध्यात्म मार्ग में गुरु के सहारे ही प्रगति संभव होती है। गुरु ऐसा पारस है कि शिष्य को अपने से भी श्रेष्ठ बना देता है। गुरु-शिष्य का संबंध एक जन्म का नहीं होता, जन्म-जन्मान्तरों का होता है। वह लौकिक नहीं, अलौकिक होता है। वह स्वार्थ का नहीं, समर्पण और करुणा का गठजोड़ जैसा होता है। गुरु अपने सांचे में अपने प्राणबल, तपोबल के सहारे प्रखर निर्माण करता है। साधारण को असाधारण और तुच्छ को महान बनाता है। देश ने जब भी महानता का शिखर स्पर्श किया है, उसके पीछे सद्गुरुओं का हाथ रहा है।

5.5 राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र शिक्षा

किसी भी राष्ट्र की प्रगति या दुर्गति के लिए वहां निवास करने वाली जनता पूरी तरह उत्तरदायी होती है। कोई भी राष्ट्र तभी खुशहाल और शक्तिशाली बन सकता है जब जनता के दिलों में अपने देश के प्रति प्रेम हो, क्योंकि अपने देश से प्रेम करने वाली जनता राष्ट्रहित में हर त्याग के लिए हमेशा तैयार रहती है। यदि लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना का अभाव हो तो देश कभी तरक्की नहीं कर सकता है, बल्कि देश में हमेशा अशांति फैलती रहेगी। ऐसे राष्ट्र में सुख संपन्नता की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अपने देश में कानून-व्यवस्था

का पालन नहीं करने वाला व्यक्ति राष्ट्रभक्त नहीं हो सकता। इसलिए हर व्यक्ति का पहला कर्तव्य राष्ट्रहित में पूर्ण निष्ठा रखना और हर हाल में उसका पालन करना है। कोई भी व्यक्ति राष्ट्र से ऊपर नहीं हो सकता है। हर व्यक्ति राष्ट्र के लिए होता है। राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं होता। हालांकि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसके नागरिकों से होती है। नागरिकों का चरित्र, राष्ट्र के चरित्र को रेखांकित करता है। जिस समाज में नफरत और वैमनस्य का बोलबाला होगा, विश्व में उस देशकी छवि नकारात्मक ही होगी। इसके विपरीत जहां लोग आपसी मतभेदों को भुलाकर समानता और त्याग का भाव रखेंगे, उनके देश की छवि सकारात्मक होगी। राष्ट्र प्रेम का मूलमंत्र यही है कि समाज के हर व्यक्ति को समानता का भाव रखना चाहिए। कोई व्यक्ति अपने देश से कितना प्रेम करता है, इसे साबित करने के लिए जरूरी नहीं कि वह अपनी जान की कसम खाए। जहां जनता के बीच जितना ज्यादा आपसी प्रेम होगा, वहां राष्ट्र प्रेम की भावना उतनी ज्यादा मजबूत और दृढ़ होगी। प्रेम के अभाव में मनुष्य का कोई अस्तित्व ही नहीं है और न में ही आपसी प्रेम के बिना राष्ट्र प्रेम की कल्पना की जा सकती है। प्रेम ही वह चीज है, जो इंसान को इंसान से और पूरे देश को जोड़कर रखने में समर्थ है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि जब पड़ोसी भूखा मरता हो, तब मंदिर में भोग चढ़ाना पुण्य नहीं, बल्कि पाप है। जब मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो, तब हवन में घी जलाना अमानवीय कर्म है।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा अपने लघु शोध प्रबंध जिसका शीर्षक "डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान" का सम्यक अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष निकलकर सामने आए हैं—

- महापुरुषों का जीवन जन सामान्य के लिए अनुकरणीय बन जाता है। महापुरुषों का जीवन व उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असामान्य होते हैं, जो जन्मजात कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों का सामना करके ऊंचे उठते हैं, वे और भी श्रद्धास्पद बन जाते हैं। ऐसे ही महापुरुष समुचित मार्गदर्शन कर सकते हैं। उन्हीं महापुरुषों में से एक हैं डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जिन्होंने अपना संपूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शिक्षित और सांस्कृतिक समाज के सर्जन हेतु समर्पित कर दिया है।
- डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' ने यह अनुभव किया कि हम पाश्चात्य के अधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को भुलाते जा रहे हैं, जो कालांतर में हमें गरिमा रहित कर देगी। वह ऐसे भारत की संकल्पना करते हैं कि जहां शिक्षा एवं संस्कृति द्वारा ऐसे समाज का निर्माण किया जाए जो भारत की अन्य सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति को ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम खोजों से संतुष्ट कर भारत को पुनः विश्व गुरु का दर्जा दिला सके। डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' इसी संकल्प को पूरा करने में प्रयासरत है।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी की पत्नी शशि प्रभा ने गृह कार्य के दायित्व का निर्वाह करते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा डॉ० ललित के शोध कार्य में सहायता की।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी के पिता ने बचपन से ही अपने पुत्र को कविता लिखने की प्रेरणा दी।

- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी के पिता संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। वे उनकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए स्थानीय संस्कृत विद्यालय गए लेकिन वहां का अध्यापक मंडल उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका इस पर उन्हें अध्ययन हेतु अन्यत्र ले जाया गया।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी के पिता आर्युवेद के रसायनों का निर्माण करते थे और निशुल्क औषधियों का वितरण करते थे।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी द्वारा हिन्दी साहित्य की विपुल सेवा की गई।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी निरंतर काव्य रचना एवं अनुसंधान कार्यों में लीन रहे।
- डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी को शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कार एवं उपाधियां प्राप्त हुई। इन्होंने शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।
- शिक्षा व्यक्ति के भीतर पूरे संकल्पों को जगाने के लिए उसके संपूर्ण विकास के लिए उत्तरदायित्व की भावना जागृत करती है।
- बालकों में ऐसे सामाजिक गुणों का विकास किया जाना चाहिए जिससे वे अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।
- व्यक्ति को अनुशासन में रहकर अपने कार्यों को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए।
- गुरु एवं शिष्य का संबंध पिता एवं पुत्र के समान होना चाहिए।
- गुरु समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन कर देश को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है।
- राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावना प्रत्येक व्यक्ति में अवश्य रूप से होनी चाहिए।

6.2 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध में शैक्षिक उपादेयता अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध का शीर्षक “डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ललित का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान” हैं जिसके अंतर्गत कवि डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन किया गया। शिक्षक विद्यार्थी एवं जन सामान्य इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकेंगे। कभी ललित जी ने अपने जीवन में कुल 7 कालजयी कृतियों की सर्जना की जिससे उनका नाम हिंदी साहित्य के जगत में सदा के लिए अमर हो गया। हमें इनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रूचि के अनुसार जीवन में ऐसे पर्याप्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए। जिससे जगत हमें भी सदा याद रखें।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कभी ललित जी की 7 कृतियों का अध्ययन किया गया है जिन्हें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थी बुंदेलखंड के प्रसिद्ध कवि की लेखनी से परिचित हो सकें तथा उनके काम की अभिव्यक्त संवेदना को आत्मसात कर सकें। शिक्षक विद्यार्थी एवं जन सामान्य कभी ललित जी के काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति की संवेदना को महसूस कर सकेंगे एवं उनसे प्रेरणा प्राप्त कर जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगें।

6.3 अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध में, डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात पाया कि किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो। प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहें हैं—

- हमें महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्हें गृह कार्य तक सीमित रखने की सोच संकीर्णता वादी है। उन्हें पुरुषों के समान उच्च शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए तभी सच्चे अर्थों में एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकेगी और वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो सकेगी।

- विद्यार्थियों में अच्छे कार्यों की प्रेरणा एवं बीजारोपण बचपन से ही किया जाना चाहिए। कौन जाने वह बीजारोपण भविष्य में वट वृक्ष बन जाए।
- बचपन से ही विद्यार्थियों की शिक्षा का विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है क्योंकि यदि एक बार नींव कमजोर हो गई तो उस पर मजबूत भवन का निर्माण नहीं किया जा सकता। अतः विद्या के मंदिर का आदर्श होना अति आवश्यक है जो विद्यार्थियों की सभी जिज्ञासाओं का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सके। संस्कृत विद्यालय के प्राध्यापक मंडल का ललित जी के पिताजी को संतुष्ट ना कर पाना उस समय के संस्कृत विद्यालयों की दशा का चित्रण करता है। आज यह स्थिति और भी बदतर हालत में है। संस्कृत विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी एवं प्राध्यापक धाराप्रवाह वार्तालाप में अक्षम है। यही हाल सामान्य विद्यालयों, संस्कृत के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का है क्योंकि संस्कृत को गौरवमयी पद प्रदान किए बिना स्वर्णिम भारत की कल्पना साकार नहीं हो सकती। इसमें सुधार की नितांत आवश्यकता है।
- दीन दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। समाज के सक्षम वर्ग को चाहिए कि वह निर्मल हाशिए परिस्थिति समाज के लिए अपना योगदान अवश्य करें। ताकि उस समाज को भी मुख्यधारा में लाया जा सके और अमीर गरीब ऊंच-नीच की खाई को पाटा जा सके। ललित जी के पिताजी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों के माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों में वस्त्र वितरण, सरकारी अस्पतालों में मरीजों को फल वितरण, वृद्धा आश्रम में सेवा सुप्रभात, बाढ़ पीड़ितों को मदद, गर्मियों में यात्रियों के शीतल जल वितरण इत्यादि कार्यक्रम समय-समय पर संपन्न कराए जाएं ताकि विद्यार्थी इसका महत्व समझें और इसे अपने जीवन का अंग बना सकें।
- हमें भी अपने जीवन में किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत ऊंचाइयों को प्राप्त कर अपना विशिष्ट योगदान देना चाहिए। जो आगे आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक का कार्य करें, तथा समाज एवं राष्ट्र को गौरवान्वित करें।

- हमें अपने जीवन में किसी विशेष कार्य में तत्परता से लीन रहना चाहिए। आलसी व्यक्ति को जीवन में कुछ प्राप्त नहीं होता। किसी भी कार्य को जुनून की हद तक करने से ही सफलता मिलती है। डॉ० ललित जी आज भी काव्य साधना एवं अनुसंधान में रत हैं जो उनकी सफलता का मूल मंत्र है। हमें भी इससे प्रेरणा प्राप्त कर आजीवन ध्येय्य साधना में लीन रहना चाहिए।
- हमें अपने जीवन में किसी विशेष कार्य क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करनी चाहिए। जिससे समाज को प्रेरणा प्राप्त हो।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा शोधकर्ता ने डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत किया है ताकि वर्तमान समय का भौतिकवादी दृष्टिकोण, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण तथा आपसी प्रतिस्पर्धा आदि समाप्त होकर सिर्फ बंधुत्व एवं सहयोग तथा सांस्कृतिक एवं मानवीय गुणों का विकास संभव बनाया जा सके। इस अध्ययन ने अपने अदर उत्पन्न कुछ प्रश्नों को प्रकट किया है। जिसे उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता है। इससे प्रस्तुत शोध के क्षेत्र का अधिक विस्तार हो सकेगा और साथ ही भविष्य में परिवर्तित शिक्षा प्रणाली में नया दौर प्रारंभ हो सकेगा–

- डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान की तुलना अन्य शिक्षकों के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान के साथ की जा सकती है।
- भावी शोध में डॉ ललित जी की कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुंदेलखंड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध कवि डॉ० चंद्रिका प्रसाद दीक्षित जी का शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान पर आधारित है। भावी शोध में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

- भावी शोध ललित जी के अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध शिक्षकों के शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान पर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रथ सूची

तिवारी, सुधा (2004)। *लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन,* पेज नंबर 299-324, पी-एच०डी० थीसिस, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी (उ०प्र०)।

<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/14905>

सिंह, राजेश कुमार (2005)। *गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं पं० मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार एवं योगदान का तुलनात्मक अध्ययन,* पेज नंबर 157-164, पी-एच०डी० थीसिस, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)।

<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/179033>

मिश्र, अजय कुमार (2006)। *जॉन डीवी एवं रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन,* पेज नंबर 299-324, पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/236397>

सिंह, दिनेश प्रताप (2007)। *भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में राजा राम मोहन रायक का योगदान एवं वर्तमान में उपादेयता,* पेज नंबर 263-264, पी-एच०डी० थीसिस, डाँ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।

<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/305662>

सिंह, जया (2007)। *उन्नसवीं शताब्दी के शैक्षिक पुनर्जागरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान,* पेज नंबर 242-252, पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/239896>

सिंह, रेनू (2008)। *भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रुप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में,* पेज नंबर 248-253, पी-एच०डी० थीसिस, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी (उ०प्र०)।

<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/12262>

यादव, अनीता (2008)। *वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में रूसो और टैगोर के शिक्षा दर्शन का अध्ययन,* पेज नंबर 2-6, पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/277053>

सिंह, प्रियंका (2009)। *राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन,* पेज नंबर 195-215, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/327119>

त्रिपाठी, अरविन्द प्रकाश (2012)। *भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में डाँ० (श्रीमती) एनी बेसेन्ट का योगदान,* पेज नंबर 279-288, पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/236475>

मिश्र, तीर्थराज (2013)। *भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में डॉ० मेरिया मान्टेसरी का योगदान,* पेज नंबर 301-309, पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/273255>
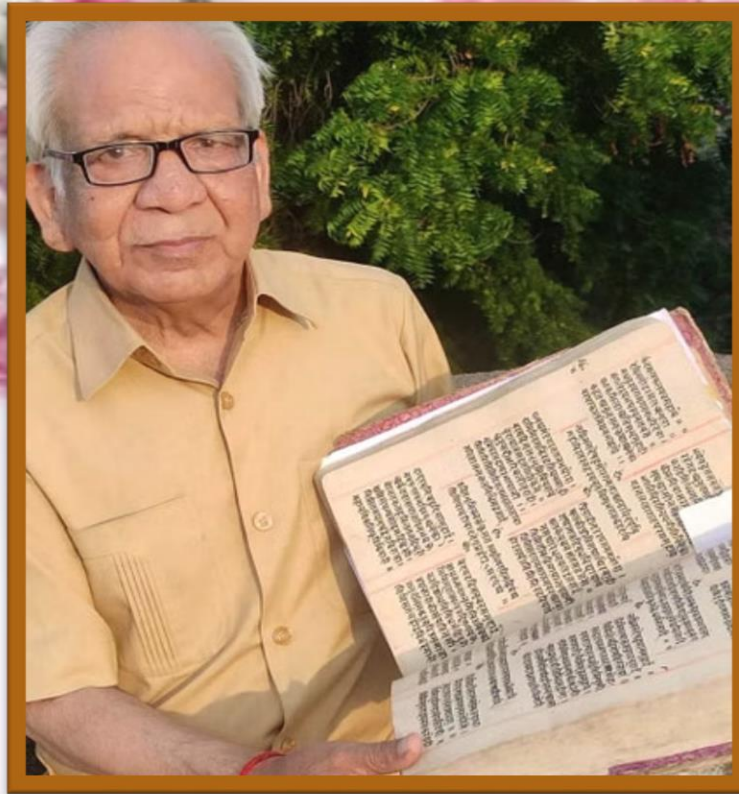
एक दूजे के पूरक हम
एक दूजे से अपनी पहचान
प्रेम,विशेषण अपना
तुम गर संज्ञा,तो मैं सर्वनाम।
ISBN 978-93-5913-470-3
9 789359 134703